इसको कहते हैं ! पत्थर-दिल, नहीं एक आंसू डाला ।
कर्म-योग में ऐसा—हां ! बन, जाता कर्मठ मतवाला ॥
मोरध्वज के अतिथि-धर्म की, उपमा मिलनी बहुत कठिन ।
मात पिता निज सुत की खोलें, हर्षित होकर वधशाला ॥

राज पाट को त्याग वचन निज, अन्त समय तक था पाला ।
पुत्र प्रिया को बेच बना खुद, वह मरघट का रखवाला ॥
कर्म-वीर कर्त्तव्य निभाया, विपदा से कब मुँह मोड़ा ।
'हरिश्चन्द्र' के मन अशक्य थी, खोली किसने वधशाला ॥

बोला सुन ओ ! बांध खम्भ से, हिरण्यकश्यप मतवाला ।
बता कहां ! भगवान छिपा है, कर बैठा क्या मुँह काला ॥
कहा भक्त ने असुर-निकन्दन, आओ—काटो मम बन्धन !
प्रकट तपोबल हुआ खोल-डाली पशुबल की वधशाला ॥

कौन जानता है ! पल भर में, किसका क्या होने वाला ।
राज तिलक की खुशी मनी थी, रंग-भंग सब कर डाला ॥
दशरथ-मरण राम वन-वासी, सीता-हरण भरत गृह-त्याग ।
[illegible] 'कैकयी' के इक चेटी, घर में खोली वधशाला ॥

राम लखन को भेष बदल कर, चुरा ले गया मतवाला ।
देवी पर बलि लगा चढ़ाने, और न कुछ देखा भाला ॥
कहा राम ने ! डरके भय से, कहां छिपे बजरंगबली ।
प्रकट पवन सुत हुआ खोल दी, अहिरावण की वधशाला ॥

अरे ! सदा वंदित होकर भी, नीच-कर्म करने वाला ।
सब कुछ पाया सभी गंवायी, उसके कर्मों की ज्वाला ॥
इक लख पूत सवालख नाती, जिसके [illegible] बलवाना है ।
उस रावण घर दिया न बाती, बनी लंक में वधशाला ॥

लगा 'कलंक' राम वन भेजी, सीता निष्कलंक बाला ।
फिर भी जपती रही प्रेम से, राम नाम की वह माला ॥
बोले लव-कुश माँ मत घबरा, पितु से हम बदला लेंगे ।
ऐसी खोलें नहीं खुली हो, कभी विश्व में वधशाला ॥

भाभी कहता लक्ष्मण दौड़ा, राम सिया सिया मतवाला ।
दोनों हाथ उठा ऊपर को, बोली बनवासिन बाला ॥
धरती माता मुझे जगह दे, जगह न मुझको दुनियाँ में ।
लगी समाने रहे देखते, सब 'सीता' की वधशाला ॥

अरे ! क्रौंच पक्षी का जोड़ा, हुआ प्रेम में मतवाला ।
एक वधिक ने बाण मार कर, नर को घायल कर डाला ॥
नारी के सुन कर विलाप को, वाल्मीक होगये विकल ।
आदि कवीश्वर कविता जननी, अरे ! यही है वधशाला ॥

वही जानता है ! जलती हो, जिसके अन्तर में ज्वाला ।
स्वाभिमान के पीछे अपना, रुब से हाथ उठा डाला ॥
रणस्थली में गर्म रक्त से, सींच गई रण-चंडी केश ।
किसे खबर थी है द्रोपदि के, बाल-बाल में वधशाला ॥

बातों में आ गया ! न समझा, दुर्योधन का उर काला ।
सात महारथियों ने धोका, देकर चक्कर में डाला ॥
क्यों ! न फोड़ी आँख अरे ! आचार्य द्रोण धिक्कार तुम्हें ?
रहे देखते मूक ! एक टक, 'अभिमन्यु' की वधशाला ॥

तड़प रहा बेताब पलंग पर, हुआ प्रेम में मतवाला ।
आती होगी आज पिऊंगा, दिलबर से दिल भर प्याला ॥
उठा एक दम ! चिपट गया, तब काट पैतरा काट दिया ।
सैरंध्री बन ! भीम बली ने, खोली 'कीचक' वधशाला ॥

गया चोर की तरह भीरु ने, कर्म कलंकित कर डाला।
अमर हुआ तो क्या? माथे का, घाव नहीं भरने वाला॥
अरे नीच? अश्वत्थामा क्यों, धर्म-युद्ध बदनाम किया।
द्रोपदि के सुत सोये सुख-मय, नींद खोल दी बधशाला॥

बुलवा कर धोके से! दिल में, खुश होता होने वाला।
जब आये तब भरी सभा ने, सहसा हमला कर डाला॥
सब को यमपुर भेज कृष्ण ने, छाती पर चढ़ प्राण लिये।
उसी 'कंस' की रंगभूमि, बन गई उसकी बधशाला॥

उससे बढ़ कर! और कौन अब, होगा शुद्ध हृदय वाला।
अपने मरने का रहस्य भी, जिसने आप बता डाला॥
अरे पार्थ! तुझमें कुछ दम था, तो उसके सन्मुख आता।
आड़ शिखंडी की आखिर, बन गई भीष्म की बधशाला॥

श्री कृष्ण का! सर्व प्रथम, जब था पूजन होने वाला।
क्रोधित हो यह देख, गालियां लगा सुनाने मतवाला॥
अरे! बोल वह कब तक सुनता, सुनलीं उसकी सौ गाली।
वही राजसूयज्ञ बना, शिशुपाल दुष्ट की बधशाला॥

राज-नीति औ धर्म-नीति थी, भेद-नीति सबसे आला।
काल प्रबल के आगे सब कुछ, भूल गया वह मतवाला॥
अतुलित बल योगेश अलौकिक, चक्र सुदर्शन धारी था।
उसी 'कृष्ण' की एक बधिक ने, बन में खोली बधशाला॥

कुशा पैर में चुभी तभी तो, उसका मूल मिटा डाला।
ऐसा ही पागल होता है, सच्ची एक लगन वाला॥
स्वाभिमान का दिव्य देवता, कैसे निज अपमान सहे।
महा हठी चाणक्य ने! खोली, महानन्द की बधशाला॥

गिरा गोद में ! घायल पक्षी, आतुर हो देखा भाला ।
वहीं बधिक आ गया भूख से, था व्याकुल मरने वाला ॥
जीवन मरण आज 'गौतम' को, खूब समझ में आया था ।
किस पर दया करूँ ! क्या दुनियां, इसी तरह है बधशाला ॥

रावण आदिक हुए अनेकों, इसी भूमि पर भूपाला ।
छोड़ सभी धन धाम गया, कर फैलाये जाने वाला ॥
लिखा 'भोज' ने ले जाना तुम, छाती पर धर मुञ्ज चचा ।
मुझे राज की चाह नहीं थी, क्यों खोली फिर बधशाला ॥

नारी के पंजे में पड़ कर, जो चाहा सो कर डाला ।
हाय ! बाप क्यों हुआ निर्दयी, बेटे को खाने वाला ॥
राज्य त्याग कर बना अहिंसक, वह कलंक तो नहीं मिटा ।
हा ! अशोक क्यों तुमने खोली, सुत कुणाल की बधशाला ॥

हुआ कलिङ्ग विजय तब ही, जब लाखों का वध कर डाला ।
रणस्थली को देख शोक में, था अशोक वह मतवाला ॥
यह अनर्थ हा ! यह अनर्थ क्या, एक जरा सी इच्छा थी ।
पत्थर दिल को भी 'प्रियदर्शी' कर देती है बधशाला ॥

हाथ कफन से ! बाहर कर दो, हृदय नहीं मेरा काला ।
देखे दुनियां ! खाली हाथों, जाता है जाने वाला ॥
कहा 'सिकन्दर' ने मरते दम, मेरे गम में मत रोना ।
वह ही रोवे जिसके घर में, नहीं खुली हो बधशाला ॥

चढ़ा क्रास पर कीलें ठोकीं, दिल को घायल कर डाला ।
फिर भी अन्तिम दम तक गाता, रहा यही मरने वाला ॥
विश्व-नियन्ता प्राणि मात्र के, अपराधों को करे क्षमा ।
धन्य महात्मा 'ईसा' की जय, बोल उठी थी बधशाला ॥

किसे खबर थी ! ऐसी जलती, इसके सीने में ज्वाला ।
जिसके बल पर उस बाला ने, इतना करतब कर डाला ॥
जला दिया जिन्दा तो क्या है, फिर वह आजाद रही ।
अरे ! फ्रांस की थी स्वतन्त्रता, देवि 'जोन' की बधशाला ॥

यहाँ न कोई हिंसा करना, लौट जाय लड़ने वाला ।
महादेव ! भगवान करेंगे, आप शत्रु का मुँह काला ॥
हुये अंध-विश्वासी कायर, होना था सो वही हुआ ।
'सोमनाथ' में खोला गया, महमूद गज़नवी बधशाला ॥

सबसे कहता फिरा जगत में, हैं तूफाँ आने वाला ।
मगर न माना सत्य किसी ने, समझा है भोला भाला ॥
अरे ! वही 'मनु' आदि पुरुष, तुम उसको नौव्वा या नूह कहो ।
बैठ नाव में देख चुका है, इस दुनियाँ की बधशाला ॥

खौफ नहीं है ! तुझे अक्ल पर, पड़ा हाय ! पर्दा काला ।
सच कहदे ! क्या नूर इलाही, तूने है देखा भाला ॥
जिसे खुदा का जलवा कहते, वह क्या था कुछ और न था ।
गिरा तूर पर 'मूंसा' देखी, एक झलक जब बधशाला ॥

महरबान होकर मौला ने, बख्शा था ! रुतबा आला ।
अरे ? तभी तो था मुर्दों को, वह जिन्दा करने वाला ॥
'काफिर' कहा उसे तो उसने, खाल खींच अपनी दे दी ।
झुका शम्श हा ! देख शम्श, तबरेज तुम्हारी बधशाला ॥

भूल खुदा को ! माँग पेड़ से, पनाह छिपा छिपने वाला ।
दामन बाहर रहा जरा सा, दुश्मन ने देखा भाला ॥
यहीं छिपा है बोल उठा, शैतान करो इसके टुकड़े ।
तब आरे से ! खोलीं थी, जरदश्त तुम्हारी बधशाला ॥

दुनियाँ में रह कर दुनियाँ से, दूर सदा रहने वाला।
किसको 'सिजदा' करता जिसने, सब अरमान मिटा डाला॥
चढ़ा दार पर! तब देखा, दिल वाले का दिल दुनियाँ ने।
बेकसूर मंसूर! अनलहक, बोल उठी थी बधशाला॥

बोल कौन! था पथ-भ्रष्टों को, सत पथ पर लाने वाला।
मानवता के लिये प्रेम से, पिया हलाहल का प्याला॥
हुआ सिकन्दर और अरस्तू, अफलातू लुक्माँ तो क्या।
अमर वीर 'सुकरात' तुम्हारी, अमर रहेगी बधशाला॥

अरे नीच! जयचन्द बना तू, भाई को खाने वाला।
आँख फोड़ कर हाय! कैद में, राय पिथौरा को डाला॥
धन्य 'चन्दवरदाई' तुमको, धन्य तुम्हारे साहस को।
खूब मुहम्मद गौरी की, गजनी में खोली बधशाला॥

घायल रण में पड़ा पिथौरा, समझ उसे मरने वाला।
गीध बैठने लगे देखता था, दिलेर दिल वाला॥
माँस फेंक निज कर से अपना, बचा लिये स्वामी के प्राण;
धन्य 'संयमाराय' तुम्हारी, अमर रहेगी बधशाला॥

प्यासा था बनवीर! खून का, उदयसिंह के मतवाला।
तूने स्वामी सुत-रक्षा हित, अपना सुत मरवा डाला॥
आंसू निकला नहीं एक भी, निकली मुख से हाय कहां।
अमर रहेगी 'पन्ना' माँ की, वीर-भूमि में बधशाला॥

और नहीं है! कोई अब तो; मेरा गिरधर गोपाला।
डाल गले में 'साँप' प्रेम से, पिया हलाहल का प्याला॥
बनी राज रानी दीवानी, सारी दुनियाँ ठुकराई।
'मीरा बाई' अमर बनाई, प्रेम-भक्ति की बधशाला॥

कामातुर को पटकी देकर, पहिले तो भू पर डाला ।
तान कटारी फिर सीने पर, चढ़ बैठी उसके बाला ॥
हा ! हा ! खाने लगा खून पी, एक घूंट फिर छोड़ दिया ।
अकबर को मीना बजार में 'किरण' दिखाई बधशाला ॥

किस किस को ! अब रोने बैठे, क्या रोवे रोने वाला ।
घाव न पहला भरने पाया, और उभर आया छाला ॥
ज़र के पीछे ! मूल्य जान का, जान सका न चरवाहा ।
दुखिया दिल्ली देख चुकी है, नादिरशाह की बधशाला ॥

खिलजी ने चित्तौड़ मिटाने का, विचार कर ही डाला ।
पीना चाहे स्यार ! सिंहनी, के हाथों ही से प्याला ॥
जीते जी जल गई ! सती के, नहीं धर्म को आँच लगी ।
वीर 'पद्मनी' के जौहर ने, खूब जगाई बधशाला ॥

शाहजहाँ को आह ! कैद में, उसके बेटे ने डाला ।
पानी को भी रहा तरसता, आखिर तक मरने वाला ॥
शहजादी जहांनारा तुझ पर, वारूँ लाखों ललनायें ।
खिदमत करी पिता की तूने, कभी न छोड़ी बधशाला ॥

ताड़ गया ! चालाकी वह भी, था आफ़त का परकाला ।
बड़ी शान से मुलाकात को, चला मरहठा मतवाला ॥
लगा शिवाजी को सीने से, अफजलखाँ ने वार किया ।
मार बघनखाँ ! वहीं खोल दी, शेर शिवा ने बधशाला ॥

हमने देखा है भाई का, भाई बध करने वाला ।
मजहब का पाबन्द वही, औरंगजेब उर का काला ॥
दारा को कर क़त्ल ! निकालीं, आँख पैर से मलने को ।
देख आगरा लाल किले में, बनी हुई है बधशाला ॥

बच्चों की तू तू मैं मैं ने, कितना किस्सा कर डाला ।
नहीं बात कुछ बढ़ने पाती, होता कोई दिल वाला ॥
दिया हुक्म ! अब इसे मिटा दो, मजहब की तौहीन करी ।
छोड़ 'हकीकत' गया धर्म की, आड़ बनी थी बधशाला ॥

पहिले तो गर्दन तक दोनों, भाई को चिनवा डाला ।
तानतेग फिर ! सिर के ऊपर, बोला क़ातिल मतवाला ॥
धर्म छोड़ दो ! बच सकते हो, बोले फिर भी है मरना ।
'वाह ! गुरु की फतह' एकदम, बोल उठी थी बधशाला ॥

देख धर्म ही साथ जायगा, और न कुछ जाने वाला ।
समझाने पर भी जालिम ने, काटा जिस्म जला डाला ॥
जिसे समझते हो दिल्ली में, शीश गंज का गुरुद्वारा ।
तेग बहादुर ! गुरु अर्जुन की, यहीं बनी थी बधशाला ॥

बेटे का सिर काट ! कलेजा, था उसके मुँह में डाला ।
लोहे के पिंजरे में करके, बन्द जलादी फिर ज्वाला ॥
लिखा धर्म का मर्म रुधिर से, गर्म शलाखों के ऊपर ।
धन्य वीर ! बन्दा बैरागी, धन्य तुम्हारी बधशाला ॥

वह फकीर बूढ़ा जिसको था, एक सभी अदना आला ।
जालिम ने उसकी गर्दन में, फांसी का फन्दा डाला ॥
देहली वालों जिसे आज कल, जामा मसजिद कहते हो ।
अरे ! यही तो है हजरत, सरमद शहीद की बधशाला ॥

पानी है तो ! इसे उबालो, बोलो औरंग मतवाला ।
धीरे धीरे आग जलाती, रोती थी मुस्लिम बाला ॥
जल जाना ओ सच्चे आशिक, लेकिन मुँह से आह न हो ।
डेग बनाया था 'मुखफी' ने, आकिलखाँ की बधशाला ॥

बधशाला

आस्तीन में सांप छिपा तब, क्या करता करने वाला ।
बिठा पालकी में धोखे से, उसे निहत्था कर डाला ॥
रहा माँगता ! अन्त समय तक, मिली नहीं तलवार उसे ।
काँप उठी थी निर्दयता भी, लख 'टीपू' की बधशाला ॥

स्वार्थ सिद्ध उसको कहते हैं, अपना मतलब हो आला ।
जैसे भी हो जाय उसी विध, जो चाहा तो कर डाला ॥
समय निकल जाता है लेकिन, बात अमर हो जाती है ।
नंद कुमार ! चेतसिंह की, हा ! बनी बनारस बधशाला ॥

वह नवाब बंगाल कि जिसका, कभी दबदबा था आला ।
पालोसी से जंग पलासी में, उसको चक्कर डाला ॥
काट काट कर टुकड़े उसकी, माँ ! के आगे डाल दिये ।
आह ! मीर जाफर ने खोली, थी सिराज की बधशाला ॥

पहिले तो ! चाकू से अपना, चाक कलेजा कर डाला ।
फिर गर्दन की रगें काट कर, मिटा आप मिटने वाला ॥
लार्डक्लाइव ! तुम्हें घृणा थी, जब इतनी इस जीवन से ।
तब भारत में आकर तुमने, क्यों खोली थी बधशाला ॥

कारीगरी हमारी जिसकी, है मिसाल सबसे आला ।
वही थान मलमल का जिसको, बाँस नली में था डाला ॥
उफ ! इनाम यह मिला अँगूठे, काटे गये जुलाहों के ।
ढाका औ मुंगेर बनाये, शिल्प-कला की बधशाला ॥

बोल ! बहादुर शाह दिया क्या, तोहफा 'हडसन' मतवाला ।
कौन ? रहा अब मुगल राज का, अरे ! नाम लेने वाला ॥
देखे सिर बेटे पोतों के, शाह 'जफर' ने मुँह फेरा ।
आह ! हम्द-लिल्लाह रहे, ता-हश्र याद यह बधशाला ॥

माँ बहिनों की ! इज्जत पर भी, बोल कभी आंसू डाला ।
कौन राम लगती ! दुनियाँ में, रहा आज कहने वाला ॥
क्या छोड़ा क्या अरे ! न लूटा, सभी तरह पामाल किया ।
अवध बेगमों ने सींची थी, खून जिगर से बधशाला ॥

नाना और ताँतिया टोपी, पिया 'मुबारिक' ने प्याला ।
हुये नशे में चूर जलादी, घर घर में जीवन ज्वाला ॥
बाँध पीठ सुत ! चढ़ घोड़े पर, झूम झूम कर मतवाली ।
खोल गई सन् सत्तावन में, झांसी वाली बधशाला ॥

धोके से मारा जाता है, सत्य बात कहने वाला ।
पिला दूध में कांच लोभ वश, अपना धर्म गवाँ डाला ॥
ऋषि 'दयानन्द' तेरे उर का, वार पार क्या खाक मिले ।
बख्शा क़ातिल को इनाम, बदनाम नहीं की बधशाला ॥

यही 'मुरादाबाद' जहां पर, था दिलेर दिल मतवाला ।
जन्मभूमि हित जिसने अपना, तन मन धन सब दे डाला ॥
मिली सजायें मौत ! क्षणिक में, छोड़ गया पंजर योगी ।
टर्की में देखो सूफी--अम्बाप्रसाद की बधशाला ॥

जीते जी कर सके न कुछ, मरने पर सब कुछ कर डाला ।
लूट खजाना 'कोहनूर' लेगया, हाय दिल का काला ॥
'रानीजिन्दा' कैद करी, लंदन दलीपसिंह भेज दिया ।
तब 'राणा रणजीतसिंह' के, खुली राज्य की बधशाला ॥

सैनिक दल ने ! घेर महल को, किया कारनामा काला ।
'वाजिदअलीशाह' से जबरन, जो चाहा लिखवा डाला ॥
छीन सल्तनत ! उसे कैद, करके कलकत्ते में रखा ।
हा ! कैसा अन्धेर समय का, फेर 'अवध' की बधशाला ॥

कारतूस जब 'गाय-सुअर' की, चर्बी वाला दे डाला।
भड़क उठे ! भारत के सैनिक, अरे ! विधर्मी कर डाला॥
'मङ्गलपांडे' नहीं सह सका ! ह्यूसन का संहार किया।
फिर सत्तावन की ज्वाला ! बन गई, भयंकर बधशाला॥

'दत्तक पुत्र' प्रथा को जब; डलहौजी ने रद कर डाला।
था कितने ही राजाओं का, वंश नाश होने वाला॥
जितनी थीं सन्तानहीन, विधवा-रानी सर्वस छीना।
ब्रिटिश राज्य में राज्य मिलाया ! बना राज्य की बधशाला॥

हाथी, घोड़े, वस्त्राभूषण, सब नीलाम करा डाला।
तोड़ा फर्श ! दृश्य था तब तो, दिल को दहलाने वाला॥
पड़ी 'मृत्यु शैया' पर दुखिया, अन्नपूर्णा ! रानी हाय !
देख रही थी ! अपनी, अपने आप राज्य की बधशाला॥

हुआ ग्वालियर विजय, सेंधिया, भागगया दिल का काला।
डूब गया फिर ! राग रंग में, हाय 'पेशवा' मतवाला॥
समझाया पर ! एक न मानी, वीर 'लक्ष्मीबाई' की।
स्वतंत्रता की हृदय हीन, बन गये स्वयं ही ! बधशाला॥

कितनों ही के गले बांध कर, वृक्षों पर लटका डाला।
लटकाया फिर उनके नीचे ! लगा रहा जालिम ज्वाला॥
यहीं 'फतेगढ़' शहर समूचा, लूट लिया औ फूंक दिया।
हंसता था 'रैनोड' हमारी, देख देख कर बधशाला॥

'चढ़ै खालसा' दिल्ली पर, यह 'सत्य गुरू' कहने वाला।
इस भविष्यवाणी को ! तुमने, कैसे झूंठ समझ डाला॥
यही वक्त है ! लो बदला ! चढ़ गया रंग अंग्रेजों का।
समझ न पाये चाल ! खालसा, लगे खोलने बधशाला॥

हाथी के पैरों से बांधा! कर, ज़ालिम ने मुँह ! काला।
शहर घुमाया! फिर कढ़ाह में, बैठा कर चूना डाला॥
पानी के पड़ते ही सारा! जिस्म हुआ छिछड़े छिछड़े।
यही 'मुरादाबाद' बना 'नन्जू नवाब' की बधशाला॥

नंगा करके! तांबे के, टुकड़ों से, दाग लगा डाला।
फिर उनके ही खून से होली, खेल रहा था मतवाला॥
हिन्दू मुस्लिम बन्द पढ़े थे, गाय सुअर की खालों में।
उन्हें आग में भून! बनाये, मन्दिर मसजिद बधशाला॥

उसे खबर क्या थी! मेरे संग है धोखा होने वाला।
'अहमदशाह मौलवी' मिलने आया, वहीं मार डाला॥
दिया 'पुवायां' के राजा को फिर इनाम अंग्रेजों ने।
तुझ पर क्या विश्वास, दिखादी! वही उसे भी बधशाला॥

सुन कर जिसका नाम! फिरंगी पर पड़ जाता था पाला।
एक लालची ने धोखा दे, उसको बन्धन में डाला॥
फांसी पर चढ़ गया! अमर—होगया 'तांतिया' मरदाना।
पूर्णाहुति बन गई, गदर की, वीर! तुम्हारी बधशाला॥

मार कह कहा! चढ़ फांसी पर, हंसा जोर से मतवाला।
क्या होता है! कमी नहीं है, मुझको अगर मिटा डाला॥
मेरे खूं से अरे! अनेकों; 'पीर अली' होंगे पैदा।
मैं न सही! तो वह खोलेंगे, ब्रिटिश राज्य की बधशाला॥

उधर अकेले बीस! इधर अंग्रेजों की पल्टन आला।
खूब लड़े दिल खोल नाक में; दम गोरों की कर डाला॥
उड़ा तोप से! फूंक दिया घर, तब आगे को फौज बढ़ी।
'यही इटावा' यहीं! बनी है; उन वीरों की बधशाला॥

लगी हाथ में गोली ! उसने, हाथ कलम ही कर डाला ।
फेंक दिया गंगा में सहसा, बोल उठा ! जय मतवाला ॥
अस्सी वर्ष का बूढ़ा होगा, कौन 'कुँवरसिंह' सा नाहर ।
जिधर उठाई आंख उधर बन, गई पलक में बधशाला ॥

कुंवरसिंह मर गया अमरसिंह; हार गया जब दिलवाला ।
तब कब्जा जगदीशपुरे पर, अंग्रेजों ने कर डाला ॥
भरी तोप से ! लिपट गई सब, और पलीता लगा दिया ।
राज महल को ! राजरानियां, बना रहीं थी बधशाला ॥

'भैणी साहब' मस्त हुए, पीकर ! आजादी का प्याला ।
वह 'कूका विद्रोह' लगी थी, एक साथ उर में ज्वाला ॥
बांध तोप के मुँह से ! अड़सट, वीरों को हा ! उड़ा दिया ।
'गुरू रामसिंह' की वर्मा में, फिर खोली थी बधशाला ॥

भारतीयों का ! अहित 'हापकिंसन' ही था करने वाला ।
देख देख कर जुल्म वीर के, जलती थी उर में ज्वाला ॥
भरी सभा में मार ! तमंचा फैंक, चढ़ गया फांसी पर ।
बनी कनाडा अमरीका में, 'मेवासिंह की बधशाला ॥

है कोई ? 'हरदयाल' सरीखा, आजादी का मतवाला ।
हो सशस्त्र विद्रोह ! लगी थी, यही एक उर में ज्वाला ॥
इसी ध्येय पर तूने अपना, तन मन धन सब वार दिया ।
तेरे ही ! पीछे जीवन भर, रही घूमती बधशाला ॥

ठूंस ठूंस कर ! तंग कोठरी. में भर बन्द किया ताला ।
कितनों ही को, संगीनों से, बींध ! कुये को भर डाला ॥
वह 'कल्यादां बुर्ज' और, कल्यादां खूं 'अजनाले' का ।
कौन भूल जायेगा ! जालिम, 'कूपर' तेरी बधशाला ॥

गीता गीता कहे ! न कहता, त्यागी त्यागी मतवाला।
लिप्त हुआ माया में भूला, अपने को भोला भाला॥
गीता से ! अमरत्व बरसता—है फांसी के तख्ते पर।
खुदी छोड़ कर ! कभी न देखी, 'खुदीराम' की वधशाला॥

मीन 'रैंड' का अवसर पाकर, वीरों ने वध कर डाला।
मरने से ! कब कहां डरा है, अरे ! अमर होने वाला॥
फांसी पर चढ़ गये ! झूमते, एक साथ ! तीनों भाई।
वे 'चाफेकरबन्धु' कि अब तक, गुण गाती है वधशाला॥

भारतीय को ! भारत आने, पर प्रतिबन्ध लगा डाला।
दीवाने ! चल पड़े झूमते, देश प्रेम का पी प्याला॥
'कोमागाता मारू' से जब वह, 'बजबज' में उतर पड़े।
बोल उठे ! जय भारत, गोरे खोल रहे थे वधशाला॥

सब से पहिले चढ़ फांसी पर, निज कर से फंदा डाला।
ऊंचे स्वर से, फिर बोला ! 'करतारसिंह' भोला भाला॥
यही एक अभिलाषा है ! प्रभु, भारत को आजाद करूं।
चाहे कितनी बार देखनी, मुझे पड़े यह वधशाला॥

मौका पा कूदा जहाज से, जब समुद्र में दिल वाला।
सभी चकित हो गये और, खतरे का बिगुल बजा डाला॥
बरस रही थी गोली ! फिर भी, रहा तैरता देख चुका।
यही 'वीर सावरकर' कितनी बार, न जाने वधशाला॥

शस्त्र भरे हैं, गदर पार्टी, का जहाज आने वाला।
पता चला जब अंग्रेजों को, इन्तजाम सब कर डाला॥
तीनदिवस का भूखा फिरभी, अन्तिम दम तक खूब लड़ा।
धन्य 'यतीन्द्र' मुकर्जी तेरी, बालेश्वर की वधशाला॥

'लार्ड हार्डिङ्ग' पर देहली में, तूने ही था 'बम' डाला ।
चला गया जापान ! आंख में, धूल झोंक कर दिल वाला ॥
'रास बिहारी बोस' तुम्हारा, सब प्रयत्न हो गया सफल ।
अपनी आंखों देख गये तुम, अंग्रेजों की बधशाला ॥

माता ! तुमसे एक शर्त पर, तेरा सुत मिलने वाला ।
मुख देखूंगा नहीं ! देखकर, मुझे अगर आंसू डाला ॥
हंसी खुशी से मिल माता से, फिर 'सत्येन्द्र' चढ़ा फांसी, ।
वह बड़भागिन हंसते हंसते, देख रही थी बधशाला ॥

कोई बिरला ही होता है, दानी ऐसे दिल वाला ।
खुली न होगी ! खुलै कहीं भी, जैसी खोली पौशाला ॥
प्यास बुझाता हो प्यासे की, खाये सीने पर गोली ।
कितनी श्रद्धा मयी बनी थी, 'श्रद्धानन्द' की बधशाला ॥

कठिन कठिन ! कहने से कुछ भी, सरल नहीं होने वाला ।
खेल जान पर गया उसी ने, मुश्किल को हल कर डाला ॥
साक्षात् ! साहस की देवी, धन्य धन्य श्री 'वीणा दास' ।
दिखलाई बंगाल गवर्नर को, तुमने ही ! बधशाला ॥

सन्ध्या पूजा और हवन पर, जब प्रतिबन्ध लगा डाला ।
आर्य मात्र के उर में भड़की, असंतोष की तब ज्वाला ॥
बांध कफन ! सिर से दीवाने, सत्याग्रह को निकल पड़े ।
बना 'हैदराबाद' अनेकों; 'आर्यवीर' की बधशाला ॥

अपनी 'संस्कृति' की रक्षा, करै न क्यों ? करने वाला ।
सर्व संघ का गुरु 'गोलवलकर' ने ध्येय बना डाला ॥
उसे मिटा दो ! हिन्दू हो, या मुसलमान कोई भी हो ।
खोल रहा जो ! अरे हमारी 'संस्कृति' की बधशाला ॥

सुख से बैठा कौन ? किसी की, आजादी हरने वाला ।
शाह 'अमानुल्ला' को धोका, देकर बेघर कर डाला ॥
खूब करी मनमानी फिर भी, आखिर में फल वही हुआ ।
देखी 'बच्चा-सक्का' ने भी, दो दिन पीछे बधशाला ॥

देश प्रथम है ! पीछे मजहब, बोला 'हिटलर' मतवाला ।
मरने दो 'ईसा-मसीह' को, ठोको गिरजा में ताला ॥
हमने माना ! देश प्रथम है, लेकिन मानव धर्म वता ।
मानव होकर ! मानवता की, खोल गया क्यों ? बधशाला ॥

वह कागज का पटेवाज, जो था अपूर्व लड़ने वाला ।
'स्टेलिन' की अरे नाक में, था जिसने दम कर डाला ॥
उसी वीर को तूने जालिम, हा ! भट्टी में झोंक दिया ।
अरे ! हटीले हिटलर खोली, क्यों ? गोरिङ्ग की बधशाला ॥

उससे बढ़कर कौन विश्व में, होगा पत्थर दिल वाला ।
ठोक चुका है मजलूमों के, मुंह पर ! जो जालिम ताला ॥
कौन सुने फरियाद ! जहां पर, होंठ हिलाना महा कठिन ।
जिसने 'गर्दन' जरा उठाई, उसे 'दिखाई' बधशाला ॥

वह भी क्या ? राजों में राजा, निज कर्तव्य नहीं पाला ।
जिसने रैय्यत को सुत के सम, नहीं कभी देखा भाला ॥
पीड़ित दलितों मजलूमों का, बेगुनाह ! खू चाट लिया ।
उसी 'जार' की ! खुली, सरे-बाजार 'रूस' में बधशाला ॥

डायर ! ओडायर का हमको, याद कारनामा काला ।
वही जुल्म की अन्तिम सीमा, बना तीर्थ 'जलियांवाला' ॥
पिण्डदान करने कुटुम्ब को, उठो सभी ! 'पंजाब' चलें ।
नया राष्ट्र ! निर्माण करेगी, उन वीरों की बधशाला ॥

ब्रिटिश कफन की ! कील बनेगा, मेरे सीने का छाला ।
आगे बढ़ कर झूम गया, 'पंजाब-केशरी' मतवाला ॥
तू जाये लाहौर ! तो मस्तक, झुका चूम लेना भू को ।
मालरोड़ पर बनी हुई है, लालाजी ! की बधशाला ॥

हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य की, भड़क उठी सहसा ज्वाला ।
उसे बुझाने के हित उसने, खून पसीना कर डाला ॥
आँक सके क्या ? फिर भी कीमत, मजहब के अन्धे जौहरी ।
हा ! गणेश शंकर जैसे की, बना 'कानपुर' बधशाला ॥

जा प्रयाग में कुम्भ त्रिवेणी, न्हाता है क्या ? मतवाला ।
धर्म कर्म सब अरे ! वृथा है, जब तेरा है दिल काला ॥
पहिले जा 'अल्फ्रेड पार्क' में, होगा तीरथ तभी सुफल ।
खोल गया 'आजाद' दिल जला, आजादी हित बधशाला ॥

यहीं ! स्वरूप रानी ने, मोती के गल में डाली माला ।
यहीं जवाहर ने, 'कमला' का जीवन सुखद बना डाला ॥
जीते जी जल गया ! देश हित, घर का घर ही दीवाना ।
आज वही आनन्द भवन है, 'नेहरू-वंश' की बधशाला ॥

वीर वही जो ! आन बान पर, होता है ! मिटने वाला ।
जिसने तिल तिल करके अपना, हो अरमान मिटा डाला ॥
अन्त समय पूछा 'यतीन्द्र' से, किसके बल पर था अनशन ।
देश प्रेम की हूक बढ़ाकर, भूख ! मिटाती बधशाला ॥

रोशन सा दिल जला कौन है, लहरी सा विषधर काला ।
दीवाना 'अश्फाक़' बनादे, सबको 'बिस्मिल' मतवाला ॥
फाँसी के तख्ते पर ! कीमत, आजादी की आँक गये ।
महा कृतघ्नी ! भूल जाय, जो उन ! वीरों की बधशाला ॥

ना मुमकिन को ! मुमकिन कर, दिखलाता है करने वाला ।
जिसने सिर रख लिया हाथ पर, उसने सब कुछ कर डाला ॥
कब से पीछे पड़ा हुआ था, दम लेकर ही दम छोड़ा ।
ओ-डायर की 'उधमसिंह' ने, लंदन खोली बधशाला ॥

'जेरू सिलम' वहीं पर समझो, कावा बुतखाना आला ।
बौद्ध बिहार जैन मन्दिर औ, गुरु-द्वारा 'नानक' वाला ॥
कहाँ भटकते फिरते पगलों, आओ ! परिक्रमा करलें ।
'देसाई' कस्तूरबा ! की, बनी जहां पर बधशाला ॥

रोक सकी ! कब बूढ़ी मां के, अन्तर की जलती ज्वाला ।
रोक सकी ! कब नव बाला के, नयनों से बहती हाला ॥
'चौरासी दिन' के अनशन से, 'चौरासी बन्धन' काटे ।
अमर 'हिमालय' की चोटी पर, 'देव सुमन' की बधशाला ॥

भीष्म पितामह सा व्रत धारी, था दिलेर वह दिल वाला ।
डाली आजादी ने जिसके, गल में खूब ! विजयमाला ॥
पर-वाना बनकर दीवाना, हा ! अनन्त की ओर उड़ा ।
अरे ! दैव निर्दयी खोल दी, क्या 'सुभाष' की बधशाला ॥

चली फौज ! आजाद हिन्द, पीकर आजादी का प्याला ।
जीत लिया 'इम्फाल' जली, जनरल टोजो के उर ज्वाला ॥
'रसद न भेजी' हाय किया, विश्वासघात ! जालिम तूने ।
वही पाप ! बन गया अन्त, जापान देश की बधशाला ॥

इधर उठा अफगान उधर, बङ्गाल मस्त था मतवाला ।
काश्मीर से रास कुमारी, तक फैली जीवन ज्वाला ॥
बालक बूढ़े युवा युवतियां, बने देश के दीवाने ।
अरे गुलामी की खोली थी, हमने जिस दिन बधशाला ॥

बधशाला

'करो-मरो' के मूलमन्त्र की, जाग उठी जिस दम ज्वाला।
तब गुलाम हिन्दोस्तान, जग उठा नींद से मतवाला॥
'बांध कफन' सिर से दीवाने, करने को बलिदान चले।
अट्टहास! करती 'रणचण्डी' देख देख कर बधशाला॥

कुछ दिन तक तो दुनियां ही से, इसे अलग था कर डाला।
अरे! जहां 'चित्तू पांड़े' का, रहा खूब शासन आला॥
कौन भूल जायेगा! बोलो, बलिया का बलिदान अमर।
'बम' बरसा कर अंग्रेजों ने, जहां बनाई बधशाला॥

'राजनारायण मिश्र' वही जो, खीरी का रहने वाला।
आजादी के लिये गले में, फांसी का फन्दा डाला॥
पत्नी की आँखों में आंसू, देखे तो! मुंह फेर लिया।
अरी अभागिन! हंसते हंसते, देख! हमारी बधशाला॥

हिन्दू मुस्लिम का फितूर, भर पूर दूर करने वाला।
चला प्रार्थना प्रभु से करने, हुआ प्रेम में मतवाला॥
अनशन से यदि मर जाता तो, जगसेवा का क्या फल था।
विश्व वंद्य हे 'बापू' तेरी, अमर रहेगी बधशाला॥

वह हिन्दू! हिन्दू कैसा जो, नीच कर्म करने वाला।
अपने ही हाथों से अपना, कर बैठा हा! मुंह काला॥
'हिन्दू' कहलाने वाले क्यों? हिन्दू को बदनाम किया।
बापू! जैसे 'राष्ट्रपिता' की, अरे! खोलकर, बधशाला॥

हिंसा से हिंसा बढ़ती है, पियो प्रेम रस का प्याला।
नफरत से नफरत को वश में, अरे! कौन करने वाला॥
'बापू' के हित अगर तुम्हारी, आंखों में कुछ 'आँसू' हैं।
बन्द लड़ाई करो न खोलो, हिन्दू मुस्लिम बधशाला॥

बना खाक का पुतला ! उसमें नूर इलाही ने डाला ।
लगी नहीं कुछ देर, एक दम खड़ा हो गया मतवाला ॥
तू इन्सा है ! कहा खुदा ने, 'यही बात' बस रखना याद ।
मुझे भूलना और खोलना, नहीं किसी की वधशाला ॥

हजरत की उम्मत पर अपना, था ईमां लाने वाला ।
जालिम 'शिमिर' बतादे फिर क्यों ! निकला तेरा दिल काला ॥
पढ़ते हुये नमाज ! खुदा के, बन्दों का सिर काट लिया ।
'जंग कर्बला' बनी अली, हस्सन हुसैन की वधशाला ॥

बुरे कर्म करके, अच्छा फल, अरे ! कहां मिलने वाला ।
सोचे समझे बिना अभागे, यह अनर्थ क्यों कर डाला ॥
तू किस मुँह से है 'जन्नत' का, तलबगार वतला काफिर ।
बना रहा दुनियां को दोजख, हाय ! खोलकर वधशाला ॥

डाढ़ी चोटी के झगड़े में, जीवन व्यर्थ गवाँ डाला ।
खुराफात में फँस कर भूला, असिल बात को मतवाला ॥
मुसलमान में बोल कमी क्या, हिन्दू में क्या लाल लगे ।
बुरा वही है ! जिसने खोली, मानवता की वधशाला ॥

मन्दिर तोड़ मुसलमां सहसा, बोल उठा अल्ला ताला ।
मसजिद फूंक और हिन्दू का, बजा शङ्ख घन्टा आला ॥
जान न पाये दोनों पागल, उसके नाम अनेकों हैं ।
किया धर्म बदनाम ! खोल, रहमान राम की वधशाला ॥

नाच गया किसकी थापों पर, जिन्ना होकर मतवाला ।
किसके सगे हुये यह गोरे, रहा हमेशा दिल काला ॥
'क्रिप्स' लगाकर आग हिन्द में, सात समुन्दर पार गया ।
बजा रहा था 'चर्चिल' बगलें, देख हमारी वधशाला ॥

खुद काफिर है ! अरे किसी को, जो काफिर कहने वाला ।
कहां सदाकत रह सकती है, जब तेरा है दिल काला ॥
जहाँ नहीं नफरत से नफरत, वह मजहब ! मजहब कैसा ।
धर्म एक है 'विश्व प्रेम' क्यों, खोल रहे हो बधशाला ॥

बोल ! कहां से आता ! भारत के, टुकड़े करने वाला ।
नहीं देखने पड़ते दुर्दिन, और न जलता यह ज्वाला ॥
एक बार हीं नहीं ! तुम्हारी, भूल सत्तरह बार हुई ।
राय पिथौरा ! हाय न खोलो, क्यों 'गोरी' की बधशाला ॥

हटा न ! मुल्ला और पुजारी, के दिल से पर्दा काला ।
कभी न मिलकर पीने देते, यह आजादी का प्याला ॥
छुरी, कटारी ! चल पड़ती है, जरा जरा सी बातों पर ।
मन्दिर, मसजिद आज बने क्यों ? मानवता की बधशाला ॥

चूम 'सङ्गअस्वद' काबे में, क्यों तू मुल्ला मतवाला ।
हरिद्वार, काशी, प्रयाग में, लिये फिरे पंडित माला ॥
एक दूसरे को समझे हैं, काफिर ! यह दोनों काफिर ।
कुफ्र मिटाओ ! प्रेम बढ़ाओ, इन्हें दिखाओ बधशाला ॥

आया है, रमजान ! हुआ क्यों, बे-ईमान मजहब वाला ।
दिन भर रहता ! याद खुदा में, फिर भी तेरा दिल काला ॥
अरे ! नमाजी कहाँ मिलेगी, तुझको जन्नत सोच जरा ।
दे अज़ान रोजे को—खोला, और खोल दी बधशाला ॥

ईद, ईद ! क्या चिल्लाते हो, ईद मनाये दिल वाला ।
जिसने ! बेटे इकलौते को, बड़े नाज से हो पाला ॥
उसे खुदा के सदके ! अपने, हाथों ही से करे जिबाह ।
मुर्गे, बकरे, गाय, शुतर की, खोल रहे क्यों बधशाला ॥

मीर, पीर, पैगम्बर ख्वाजा, और 'प्रानकलियर' वाला।
देख चुका! काबा, बुतखाना, बोल! खुदा देखा भाला॥
अरे! खुदा के-बन्दों देखो, दिल में दिल की आंखों से।
दुनियां भर की वहीं जियारत, जहाँ बनी हो वधशाला॥

सच कहदे? 'आवेहयात' किसने तेरे मुंह में डाला।
अन्न खिलाकर! बड़े चाव से, है तुझको किसने पाला॥
जन्म भूमि जननी के तू ने, कर डाले टुकड़े टुकड़े।
'पाकिस्तान' बना कर खोली, भारत माँ! की वधशाला॥

पहिले ही से! था जालिम ने, सब सामान जुटा डाला।
किसे खबर थी! ऊपर से, उजला है लेकिन दिल काला॥
नर पिशाच! 'बीसवींसदी' के, हृदय-हीन सोहरावर्दी।
नोआखली! और त्रिपुरा की, याद रहेगी वधशाला॥

नव युवती के! मात-पिता, भाई को बन्धन में डाला।
फिर उस पर बलात्कार, करता था! जालिम मुंह काला॥
इतने पर भी! हुआ नहीं, संतोष! हाय! छाती काटीं।
वह अमानुषिक कर्म बने थे, मानवता की वधशाला॥

किये जब्त हथियार! लगाया, फिर 'करफ्यूआर्डर' आला।
बेफिक्री से! मस्त चला तब, मुसलमान दल मतवाला॥
सर्वस लूटा! आग लगा! मन माने अत्याचार किये।
मांग रहा था, भीक रहम की, रहम देख कर वधशाला॥

अपने कर से! अपने घर में, अरे! लगाई क्यों ज्वाला।
एक दूसरे से, लड़ कर हा! सर्वनाश ही कर डाला॥
जब तक रहे गुलाम! मांगते रहे, नित्य हम आजादी।
अब होकर आजाद! खोलदी, आजादी की वधशाला॥

कहां ! फला फूला है कोई, अरे ! जुल्म करने वाला ।
उसे जला कर खाक करेगी, उसके जुल्मों की ज्वाला ॥
भारत रहा 'अखंड' रहेगा, यह 'भविष्यवाणी' मेरी ।
पाकिस्तान ! आप ही अपनी, बन जायेगा बधशाला ॥

है कोई ! अपने को सच्चा, मुसलमान कहने वाला ।
दिल पै रख कर हाथ बतादे, क्या कुरान देखा भाला ॥
नग्न औरतों के ! दुनियां में, कहां निकाले गये जलूस ।
तेरा पाकिस्तान ! बना, 'इस्लामधर्म' की बधशाला ॥

गर्भवती का ! गर्भ पात कर, जीवित-शिशु भूपर डाला ।
टुक्ड़े करके ! तला-तेल में, हंसता था ! हंसने वाला ॥
उसके मात पिता के मुँह में, फिर वह 'तोहफा' ठूँस दिया ।
बोल ? जायका ! कैसा है ! यह, पूंछ रही थी बधशाला ॥

जब देखा अब ! किसी तरह भी, धर्म नहीं बचने वाला ।
स्वाभिमान को लिये ! इकट्ठी, हुईं अनेकों नव-बाला ॥
नाम 'पद्मनी' का लेकर वह, सभी कुये में ! कूद पड़ीं ।
जोहर जालिम देख रहे, जय बोल रही थी बधशाला ॥

समझाया ! पर हाय ! न समझा, था उसका दिल ही काला ।
कासिम रजवी ! 'रजाकार' दल—पर ईमां लाने वाला ॥
हुई जुल्म की अन्तिम सीमा, सह न सकी 'नेहरू सरकार' ।
वह निजाम ! बन गया आप, अपने शासन की बधशाला ॥

कभी नहीं सोचा था ऐसा, तू अनर्थ करने वाला ।
चालबाज मक्कार धूर्त हा ! निकला तेरा दिल काला ॥
अरे शेख 'अब्दुल्ला' ओ गद्दार ! याद है तूने जब ।
काश्मीर में खोली थी, श्यामाप्रसाद की बधशाला ॥

ईसा की ! जो गये शरण, वह मन्त्र हुये बीसा आला ।
और खुदा के ! हो जाने से, जुदा कौन कौन ? करने वाला ॥
जब तक चोटी है ! तब तक ही, यह ठुकराये जाते हैं ।
हा ! मानव के अधिकारों की, खोल रहे क्यों ? बधशाला ॥

तेरा ! इनका जिस्म एक सा, रंग रूप भी है आला ।
यह भी बेटे उसी पिता के, है जिसने ! तुझको पाला ॥
एक बाप की सन्तानें क्या; नहीं—प्रेम से रहती हैं ।
मिलो गले से ! और खोलदो, छूत छात की बधशाला ॥

धर्म नहीं है ! अरे बर्फ है, छूने से गलने वाला ।
नहीं धर्म ! वह चीज जलादे, छूते ही जिसको ज्वाला ॥
इन्सानों को ! इन्सानों से, घृणा हुई यह कैसा धर्म ।
अरे अधर्मी ! क्यों न खोलता, हठ धर्मों की बधशाला ॥

कहां गई वह हा ! भारत की, सुरबाला के सम बाला ।
जिनके उर में स्वाभिमान की, जलती थी प्रतिपल ज्वाला ॥
वहीं पतित हो गईं ! विश्व में, था जिनका जीवन आदर्श ।
करें 'भ्रूणहत्या' छिप छिपकर, नित्य खोलतीं बधशाला ॥

नित्य नई ! सज, धज से घूमें, बाजारों में नव-बाला ।
भारतीयता कहां अकल पर, पड़ा आज पर्दा काला ॥
अपराधिन से ! कभी न कहते, दोष लगाते गुण्डों को ।
फैशन के पीछे खुलती है, खुले खजाने बधशाला ॥

पड़ा आंख में आज ! धर्म के, ठेके दारों की जाला ।
'विधवा ब्याह' नहीं करने के, चाहे मरजाये बाला ॥
नाक न कटती जब गुन्डों के, दुखिया भग जाती है ।
अरे जालिमों ! क्यों विधवा की, खोल रहे हो बधशाला ॥

सास, ससुर, देवर दुख देते, हुआ 'जेठ' का उर काला ।
नन्द, जिठानी मांस नोचती, लगा दिया मुंह पर ताला ॥
क्या सुख देखा इस जीवन का, क्या सुख देखा प्रीतम का ।
हा ! विधवा के लिये बना है, उसका घर ही ! बधशाला ॥

विधवा सेवा ! विधवा सेवा ! कह कर शोर मचा डाला ।
ताल ठोक कर चढ़ा मेज पर, दिया लेक्चर क्या आला ॥
मौज करें ! दिल फेंक महाशय, 'त्यागमूर्ति' श्री बिन्दालाल ।
कितनी विधवा बेच ! बनाई, आर्य धर्म की ! बधशाला ॥

बूढ़े के 'बन्धन' में बांधी, हृष्ट पुष्ट सुन्दर बाला ।
हा ! भविष्य को तूने उसके, नहीं कभी देखा साला ॥
जिसको चाहो उसे सौंप दो, 'गाय' और बेटी का धन ।
लालच के वस अरे नीच ! क्यों ? खोल रहा है बधशाला ॥

कभी उड़ाई, दूध मलाई, खोवा कभी बना डाला ।
माखन खाया, दही जमाया, खीर बनाई क्या आला ॥
अरे ! यही भारत माता है, माता सी जीवन दाता ।
दया न लाते ! हाय ! खोलते, उसी गाय की बधशाला ॥

सर से ! पैरों तक 'चमड़े' की, वस्तु काम लाने वाला ।
ऐसों ही ने ! 'गो सेवा' का, सब आदर्श मिटा डाला ॥
दस हिन्दू के घर में सुख से, अगर एक भी गाय रहे ।
यही सफल है, गौ-रक्षा न खुलै ! गाय की बधशाला ॥

किया वार्षिक उत्सव ! तब तो, उसको खूब सजा डाला ।
विद्वानों के हुये लेक्चर, 'हवन-कुण्ड' जागी ज्वाला ॥
शेष दिवस चिमगादड़ बन्दर, कुत्ते, गधे, करें गन्दा ।
बनी हुई है हाय ! अनेकों, यज्ञशाला ही बधशाला ॥

प्रातः उठकर ! आज 'आर्य' ने, हुक्के को देखा भाला ।
चिलम उठाई ! आग जलाई, धूंआधार मचा डाला ॥
बोल ! आत्मा दयानन्द की, क्या ? तुझको कहती होगी ।
ब्रह्म मुहूर्त में हाय ! खोल दी, यज्ञशाला की बधशाला ॥

त्यागमूर्ति ! भगवान भजन में, सदा मस्त रहने वाला ।
उसे गंडासे के प्रहार से, टुकड़े टुकड़े कर डाला ॥
छोड़ चुका घर बार, अरे ! तो फिर कैसे 'चेला-चेली' ।
क्या ? कारण था कौन बना, 'उड़ियाबाबा' की बधशाला ॥

कपड़े रंग डाले तो क्या है, दिल तो है ! तेरा काला ।
बैठ जनाने घाट ! जपै क्या, राम नाम की तू माला ॥
आँखें तेरी ! कहीं लगी हैं, और भटकता हृदय कहीं ।
हाय ! गंग के तीर खोल दी, 'राम नाम' की बधशाला ॥

आग लगा ले ! जटा जूट में, फैंक 'कमण्डल' मृग छाला ।
जीता जल जा ! 'कर्मवीर' हो, कर्मयोग में मतवाला ॥
इससे बढ़ कर ! तपो भूमि क्या, तुझे मिलेगी दुनियाँ में ।
खाक रमाले ! रम जायेगी, रोम, रोम में बधशाला ॥

जुआ खेलता ! हाय दिवाली, में भी तेरा दिल काला ।
हनूमान के रोट पूज कर, सारी निश फेरो माला ॥
करो प्रार्थना ! प्रभु से जीवन, सब विध सुखी हमारा हो ।
दीप जलाओ ! खुशी मनाओ ! खूब सजाओ ! बधशाला ॥

आज अहिंसा परम धर्म को, भूल गया क्यों ? मतवाला ।
हुआ अन्ध-विश्वासी अंधा, कर्म कलंकित कर डाला ॥
अपना सर ही ! आप चढ़ादे, ओ ! देवी के दीवाने ।
बकरे, भैंसे की मन्दिर में, खोल रहा क्यों ? बधशाला ॥

हा ! फैशन के दीवाने क्यों, अपना धर्म गवाँ डाला ।
सूत समझ कर फैंक रहा, हिन्दुत्व अरे हा ! मतवाला ॥
चोटी और जनेऊ की तू, कीमत उस 'औरंग' से पूंछ ।
जिसके पीछे ! खुली हजारों, की भारत में बधशाला ॥

धन्य धन्य कर्जन साहब को, आज हमें कर-जन डाला ।
डाढ़ी मूंछ मिटा कर रखदी, सर पर क्या काकुल आला ॥
जिसे प्रभू ! की शान और, पहचान मर्द की कहते हैं ।
बड़ी शान से ! खोल रहे, नामर्द उसी की बधशाला ॥

किसका हो विश्वास कहां पर, जाये क्या जाने वाला ।
जगन्नाथ रामेश्वर में जब, गुण्डों ने फँदा डाला ॥
मथुरा, काशी, तीर्थराज, हरिद्वार आदि देखे तीरथ ।
चिड़ियाँ फाँसी और खोलदी, मन्दिर अन्दर ! बधशाला ॥

दर दर, मारे मारे फिरते, नवकुमार ! कोमल ! बाला ।
सन्ताने दी बेच ! भूंख की, बुझी नहीं फिर भी ज्वाला ॥
दाने, दाने को ! मरदाने, दाँत निकाले फिरते थे ।
या अकाल बंगाल प्रान्त में, या 'दानव' की बधशाला ॥

जीवित मात-पिता को तूने, पानी से तरसा डाला ।
मर जाने पर, खुशी मनाई, अपना मूंड मुड़ा डाला ॥
पिण्डदान ! क्या करता पापी, पिण्ड छुड़ाते जीवन से ।
जीवन से जो ! पिण्ड छुड़ाये, आये मेरी बधशाला ॥

लैला देखी ! शीरी देखी, देखी 'मिसमोहर' आला ।
है 'अछूतकन्या' के पीछे, कोई पागल ! मतवाला ॥
क्या देखे टाकीज ! अरे नाचीज, बना पाकीज ख्याल ।
थाम कलेजा ! कभी न देखी, आजादी की बधशाला ॥

जगन्नाथ, रामेश्वर, पुष्कर, गौरी शंकर फिर डाला ।
मथुरा, गोकुल, नन्दगांव में, है क्या ? कुछ मिलने वाला ॥
पंडित होकर बना मूर्ख क्यों ? अपना हृदय विशाल बना ।
उसी भूमि में सभी तीर्थ हैं, जहां रही हो बधशाला ॥

अपना हृदय न शान्त कर सका, विश्व शान्ति करने वाला ।
कर विवाह कन्या सम बन्या, से करता है मुँह काला ।
रामकृष्ण का नाम किया, बदनाम अरे ! कह डाल ! मियां ।
कितनी ! दुर्गा, रमा, सरस्वती, की खोली हैं बधशाला ॥

राजा, राव, नवाब, सभी ने, था अन्धेर ! मचा डाला डाला ।
कभी प्रजा को प्रजा न समझा, रहा हमेशा दिल काला ॥
सङ्घ बना कर ! उन्हें सुपथ पर, लाया तू है ! 'लौहपुरुष' ।
'ताना शाही' शासन की, खोली 'पटेल' ने बधशाला ॥

कोई कहता ! पलक बिछाकर, तुझको आँखों में पाला ।
कोई कहता ! नहीं मिलेगा, मुझसा हम दम दिल वाला ॥
अरे ! पाप के बाप लोभ का, चढ़ बैठा ! जब सिर भूत ।
'जर जमीन जन' के पीछे हा, खुली किसकी बधशाला ॥

तेरे कर्मों ही ने ! तुझको, इतनी आफत में डाला ।
हमने माना ! रहा न कोई, तेरा हम दम दिल वाला ॥
पेशानी पर ! शिकन न लाना, और न करना कुछ भी गम ।
दुनियाँ जिसको ठुकराती है, गले लगाती ! बधशाला ॥

राग, रङ्ग में कभी मस्त हैं, कभी ठाठ शाही ! आला ।
कभी निराशा है ! जीवन से, कभी जला है दिल वाला ॥
उछल, डूब ! संसार सिन्धु में, क्यों तू ! गोते खाता है ।
एक 'बार में पार' लगा, देती है मेरी बधशाला ॥

हा ! फैशन के दीवाने क्यों, अपना धर्म गवाँ डाला ।
सूत समझ कर फैंक रहा, हिन्दुत्व अरे हा ! मतवाला ॥
चोटी और जनेऊ की तू, कीमत उस 'औरंग' से पूंछ ।
जिसके पीछे ! खुलीं हजारों, की भारत में बधशाला ॥

धन्य धन्य कर्जन साहब को, आज हमें कर-जन डाला ।
डाढ़ी मूंछ मिटा कर रखदीं, सर पर क्या काकुल आला ॥
जिसे प्रभू ! की शान और, पहचान मर्द की कहते हैं ।
बड़ी शान से ! खोल रहे, नामर्द उसी की बधशाला ॥

किसका हो विश्वास कहां पर, जाये क्या जाने वाला ।
जगन्नाथ रामेश्वर में जब, गुण्डों ने फँदा डाला ॥
मथुरा, काशी, तीर्थराज, हरिद्वार आदि देखे तीरथ ।
चिड़ियाँ फाँसी और खोलदी, मन्दिर अन्दर ! बधशाला ॥

दर दर, मारे मारे फिरते, नवकुमार ! कोमल ! बाला ।
सन्ताने दी बेच ! भूंख की, बुझी नहीं फिर भी ज्वाला ॥
दाने, दाने को ! मरदाने, दाँत निकाले फिरते थे ।
था अकाल बंगाल प्रान्त में, या 'दानव' की बधशाला ॥

जीवित मात-पिता को तूने, पानी से तरसा डाला ।
मर जाने पर, खुशी मनाई, अपना मूंड मुड़ा डाला ॥
पिण्डदान ! क्या करता पापी, पिण्ड छुड़ाते जीवन से ।
जीवन से जो ! पिण्ड छुड़ाये, आये मेरी बधशाला ॥

लैला देखी ! शीरी देखी, देखी 'मिसमोहर' आला ।
है 'अद्भुतकन्या' के पीछे, कोई पागल ! मतवाला ॥
क्या देखे टाकीज ! अरे नाचीज, बना पाकीज ख्याल ।
थाम कलेजा ! कभी न देखी, आजादी की बधशाला ॥

जगन्नाथ, रामेश्वर, पुष्कर, गौरी शंकर फिर डाला ।
मथुरा, गोकुल, नन्दगांव में, है क्या ? कुछ मिलने वाला ॥
पंडित होकर बना मूर्ख क्यों ? अपना हृदय विशाल बना ।
उसी भूमि में सभी तीर्थ हैं, जहां रही हो वधशाला ॥

अपना हृदय न शान्त कर सका, विश्व शान्ति करने वाला ।
कर विवाह कन्या सम वन्या, से करता है मुँह काला ।
रामकृष्ण का नाम किया, बदनाम अरे ! कह डाल ! मियां !
कितनी ! दुर्गा, रमा, सरस्वती, की खोली हैं वधशाला ॥

राजा, राव, नवाब, सभी ने, था अन्धेर ! मचा डाला डाला ।
कभी प्रजा को प्रजा न समझा, रहा हमेशा दिल काला ॥
सह्य बना कर ! उन्हें सुपथ पर, लाया तू हे ! 'लोहपुरुष' ।
'ताना शाही' शासन की, खोली 'पटेल' ने वधशाला ॥

कोई कहता ! पलक बिछाकर, तुझको आँखों में पाला ।
कोई कहता ! नहीं मिलेगा, मुझसा हम दम दिल वाला ॥
अरे ! पाप के बाप लोभ का, चढ़ बैठा ! जब सिर भूत ।
'जर जमीन जन' के पीछे हा, खुली किसकी वधशाला ॥

तेरे कर्मों ही ने ! तुझको, इतनी आफत में डाला ।
हमने माना ! रहा न कोई, तेरा हम दम दिल वाला ॥
पेशानी पर ! शिकन न लाना, और न करना कुछ भी गम ।
दुनियाँ जिसको ठुकराती है, गले लगाती ! वधशाला ॥

राग, रङ्ग में कभी मस्त हैं, कभी ठाठ शाही ! आला ।
कभी निराशा है ! जीवन से, कभी जला है दिल वाला ॥
उछल, डूब ! संसार सिन्धु में, क्यों तू ! गोते खाता है ।
एक 'बार में पार' लगा, देती है मेरी वधशाला ॥

हवा ! हवा करके छोड़ेगी, खाक ! बना देगी ज्वाला।
पानी औ मिट्टी में ! मिलकर, रहा शून्य चक्कर वाला॥
पाँच तत्व से ! तुझे रचा है, यही तत्व दें ! तुझे मिटा।
कहाँ जायगा बच कर पापी, है पग पग पर वधशाला॥

देख, देख, कर फूल रहा है, माया में दिल का काला।
तेरा यह सब, कुटम-कबीला, नहीं काम आने वाला॥
मोह त्याग ! है सब को मरना, कर्म-वीर ! गाई गीता।
खोल गया ! अर्जुन कुटम्ब की, कुरुक्षेत्र में वधशाला॥

चूस चूस कर खून ! गरीबों, का यह भवन बना डाला।
बड़े गर्व से ! बैठा गद्दी पर, मूंछ मरोड़े मतवाला॥
कभी न सोचा ! आँख मिचैगी, ठाट पड़ा रह जायेगा।
जरा देर के सुख को तूने, खोली कितनी ! वधशाला॥

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, कोई भी हो मतवाला।
जात पाँत औ छूत छात का, यहाँ नहीं ! परदा काला॥
इसी घाट से ! राजा उतरें, यही रङ्क के लिये खुला।
भेद भाव को भूल ! सभी को, एक बनाती वधशाला॥

'मृगनयनी' को छोड़ ! अरे तू, दाब बगल में मृगछाला।
आसन मार ! बैठ मरघट में, वीर मुण्ड की ! ले माला॥
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का तू, जाप किये जा ध्यान लगा।
तब जग के कण कण में तुझको, दीख पड़ेगी वधशाला॥

जग में रह कर, जग चक्कर से, दूर सदा रहने वाला।
अपने को पथ एकाकी पर, जिसने आप मिटा डाला॥
भूख-प्यास की उसे न चिन्ता, रक्त पान निज करता है।
वही श्रेष्ठ है ! इच्छाओं की, जिसने खोली वधशाला॥

बधशाला

किसका खून बहा कर ! प्रातः, आती है ऊषा-बाला ।
किसका खून बहा कर ! सन्ध्या, पीती है भर कर प्याला ॥
निशा मिटाकर सूरज निकला, सूरज छिपा ! निशा आई ।
दिवस रात की रात दिवस की, खुली परस्पर बधशाला ॥

किस का मुँह पकड़ा जाता है, जो चाहा सो कह डाला ।
दिल पै रख कर हाथ जरा तो, सोचे कोई दिल वाला ॥
जिसे समझते जुल्म ! यही है, मूल मन्त्र आजादी का ।
'रूह जिस्म में कैद' उसे आजाद ! बनाती बधशाला ॥

हे भगवान् ! हवा कैसी है, कैसी यह ! जागी ज्वाला ।
मानव ही मानव के खूं का, हुआ आज पीने वाला ॥
निर्बल के निर्बल सीनों पर, बलवानों के होते जुल्म ।
दीनबन्धु ! क्यों देख रहे हो, दीनबन्धु की बधशाला ॥

जीवमात्र को ! अपना समझें, 'विश्वप्रेम' का पी प्याला ।
राग द्वेष से रहित ! श्रेष्ठ हैं, जीवन सफल बना डाला ॥
हिन्दू होना पाप नहीं है ! यदि 'विशाल' हो शुद्ध हृदय ।
हृदय संकुचित ! ही बन जाता, हिन्दू धर्म की बधशाला ॥

जीवन को आदर्श बनाये, विश्व प्रेम का ! पी प्याला ।
'हिम्मत मरदां' मदद खुदा का, सदा गान करने वाला ॥
ताल ठोक कर ! चढ़ जाये जो, अमर ध्येय की सीढ़ी पर ।
ऐसे ही ! वीरों का स्वागत, करती मेरी बधशाला ॥

पर हित जो ! पीड़ा सहता है, होता कोई ! दिल वाला ।
है आनन्द ! उसी में उसको, जीवन सुखद बना डाला ॥
जग में जितने हुए सुधारक, अब हैं, या आगे होंगे ।
चले 'धार पर' तब सुधार का, पाठ पढ़ाती बधशाला ॥

सेज बिछाई ! चुन चुन कलियां, सोता है ! सोने वाला ।
क्या सुहाग को अर्द्ध निशा में, सब अरमान मिटा डाला ॥
जिस बाला के ! फंसा प्रेम में, यही अभागिन रोयेगी ।
खोलेगा 'यम' इसी पलङ्ग पर, इक दिन तेरी बधशाला ॥

यह कुटुम्ब ! धन, धाम कहां है, अरे ! साथ जाने वाला ।
जिसके पीछे तूने ! पागल, क्या अनर्थ न कर डाला ॥
नित्य देखता है ! तू फिर भी, जान बूझ कर फंसता है ।
'जग जाने' पर ही यह जग है, सो जाने पर बधशाला ॥

तू जितना करता है ! उतना, ही तुझको मिलने वाला ।
देख पराई चिकनी चुपड़ी, जली हृदय में क्यों ज्वाला ॥
है मजहब बदनाम ! लड़ाई, दुनियां में 'रोटी' की है ।
मरा नहीं मर सके ! पेट ही, बना विश्व की बधशाला ॥

जितना ऊंचा ! उठना चाहे, उठ जाये उठने वाला ।
नभ चुम्बी इन प्रासादों को, अन्त ग र्त ही में डाला ॥
जहां हिमालय आज खड़ा है, वहां सिन्धु लहराता था ।
लेती है जब 'करवट' धरती, खुल जाती है बधशाला ॥

आज पतन की ओर चला, इन्सान हुआ क्यों मतवाला ।
सोच रहा है ! विश्व नाश का, नित उपाय दिल का काला ॥
बना लिया 'एटमबम' तूने, अपने लिये बनाया क्या ? ।
'अमर न क्यों हो गया' देखनी, तुझे न पड़ती बधशाला ॥

तर्क, वितर्क, बढ़ाकर तूने, अपना ज्ञान गवाँ डाला ।
दुनियां क्या है ! इसे समझना, है कोई ! किस्मत वाला ॥
अरे ! कभी 'मरघट' में जाकर, सुना नहीं ! 'प्रलयंकर' गान ।
ब्रह्म सत्य है ! और सत्य है, विश्व नहीं ! यह बधशाला ॥

है पूरा जंजाल ! जगत, माया का, जाल बिछा डाला ।
निकल जाय फंदे से ! ऐसा, कौन ? मिलेगा दिल वाला ॥
आवागमन इसे कहते ! मैं, मर मर कर ! जो उठता हूँ ।
अभी देखनी मुझको ! कितनी, बार न जाने ! बधशाला ॥

सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, रङ्ग सभी का था काला ।
खूब तपाये गये ! आग में, तभी मिला रुतबा आला ॥
'कोहनूर' जिसको ! जग कहता, क्या है ! पत्थर ही तो है ।
पत्थर को ! हीरा, मोती, पुखराज बनाती बधशाला ॥

खिसक हिमालय पड़े ! सिन्धु में, लग जाये भीषण ज्वाला ।
गिरे ! टूट 'नक्षत्र' भूमि नभ, टुकड़े टुकड़े कर डाला ॥
साक्षात ! 'भगवान-रुद्र' का, अरे ! तभी दर्शन होगा ।
ऊँचे स्वर से ! जब प्रलयंकर, गान करेगी ! बधशाला ॥

दान, धर्म, क्या ? खाक करेगा, अब कोई करने वाला ।
पाप, पुण्य, कुछ नहीं ! वृथा ही, जग को चक्कर में डाला ॥
परम भक्त 'बापू' का जिसको, दानवीर जग कहता है ।
उस 'बिड़ला' का ! भवन बना, फिर क्यों बापू की बधशाला ॥

सुलग रही है ! अरे लगेगी, अभी और भीषण ज्वाला ।
जब तक 'एटमबम' है ! तब तक, नहीं चैन मिलने वाला ॥
मानवता को भूल ! विश्व के, सिर पर है 'शैतान' सवार ।
सोच रहा है ! एक बार, दिल भर का ! खोलूं बधशाला ॥

करले कुछ शुभ कर्म अरे क्यों, जीवन व्यर्थ गवां डाला ।
अनायास ! ही चला जाय तू, सदा नहीं रहने वाला ॥
'पैदा सो ! ना पैद' एक दिन, आगे पीछे सब ही को ।
जैसी जिस विध जहां लिखी है, पड़े देखनी ! बधशाला ॥

महापुरुष ! जो भी जब आया, जग को समझाने वाला ।
निष्ठुर जग ने ! उसे न जाने, किस किस विपदा में डाला ॥
अपनी अपनी कह कर कितने, चले जांयगे ! चले गये ।
बनी रहेगी ! पागल दुनियां, बनी रहेगी ! वधशाला ॥

हमने माना ! यह निर्धन है, और बना तू धन वाला ।
यह निर्मल ! तेरा उर काला, वह निर्बल तू बल वाला ॥
पीड़ित की आहों से ! लेकिन, लोह भस्म हो जाता है ।
क्यों दुखियों की खोल रहा तू, अरे निर्दयी वधशाला ॥

निज बल पर हो खड़ा किसी का, मुँह क्यों ? तकता मतवाला ।
ठंडे दिल से सोच ! जरा तू, रहा सदा ! भोला भाला ॥
ऐसा कौन ? उदार विश्व में, बिना स्वार्थ का साथी कौन ।
समय पड़े पर ! कभी न चूके, तुझे दिखाये ! वधशाला ॥

क्यों ? कोई घर बार ! छोड़ता, क्यों ! कोई जपता माला ।
किसे पड़ी थी ! पर सेवा हित, अपना सर्वस दे डाला ॥
दुख ही से तो ! अरे देखले, सुख का अनुभव होता है ।
सच कहता हूं ! लोक और, परलोक बनाती ! वधशाला ॥

कहीं ! 'धर्मशाला' बनवाई, कई बनाई ! पौशाला ।
'विधवा संघ' 'अनाथालय' में, कृष्ण-कीर्तन गौशाला ॥
कभी भीतरी भेद ! न देखा, इन गुण्डों के अड्डों का ।
अरे ! धर्म के पर्दे में क्यों ? खोल रहे हो ! वधशाला ॥

'गोरा' औ 'चैतन्य' प्रभो का, सब उद्देश मिटा डाला ।
नाच कूद कर गुण्डों के संग, करें 'कीर्तन' नव बाला ॥
यहीं गर्भ ! धारण होते हैं, यहीं ! निवारण भी होते ।
जग कहता 'गोविन्द भवन' है, मैं कहता हूँ ! वधशाला ॥

क्या ? आवश्यकता है ! फिर क्यों, 'हिन्दूकोड' बना डाला ।
प्रभु ही जाने ! इसके बिन है, कौन ? अहित होने वाला ॥
अगर पास ही करना है ! तो, हिन्दू शब्द लगाते क्यों ? ।
क्या 'तलाक' से नहीं खुलेगी, 'हिन्दु धर्म' की बधशाला ॥

कौन मिलेगी ! पति चरणों पर, जीवन अर्पण कर डाला ।
कौन मिलेगा ! पत्नी को, जीवन सङ्गिनी कहने वाला ॥
कभी परस्पर ! प्रेम न होगा, बनी रहेगी यह शङ्का ।
कब 'तलाक' दे हाय ! खोल दे, कहीं न मेरी बधशाला ॥

बेटी का सम भाग ! पिता की, सम्पत्ति में जब कर डाला ।
हैं जितने हकदार ! जलेगी, नित उनके उर में ज्वाला ॥
बहिन भाई के ! शुद्ध प्रेम का, होगा महा भयंकर रूप ।
'भैयादूज' न होगी ! होगी, बहिन भाई की बधशाला ॥

भारतीय नारी का ! जग में, हो जायेगा मुँह काला ।
था जिसका जीवन महान्, हा ! उसे गर्त में क्यों डाला ॥
सीता, द्रोपदी, सावित्री का, क्या ? आदर्श मिटाओगे ।
ज़रा ज़रा सी बातों पर ! दिन-रात खुलेगी बधशाला ॥

अब देखेगा ! सबसे पहिले, यह विवाह करने वाला ।
जिसके भाई बहिन नहीं हों, वह लड़की सबसे आला ॥
कुछ दिन पीछे ! मिले ससुर का, माल दूसरा ब्याह करूँ ।
इसको दे दूंगा 'तलाक' या, दिखला दूंगा बधशाला ॥

कुछ दीवानी ! दीवानों पर, चढ़ा विदेशी रङ्ग आला ।
तभी, 'भारती-संस्कृति' पर, आंख मींच ! पानी डाला ॥
उनसे हम क्या कहें ! भले ही, वह कितने ही ! ब्याह करें ।
निश दिन खुलती रहे परस्पर, पति-पत्नी की बधशाला ॥

जलते दीपक पर ! हर कोई, जल जाता जलने वाला ।
बुझे दीप पर ! प्राण निछावर, कर देती भारत-बाला ॥
पतिव्रता का अरे ! विश्व में, कहीं न कोई उदाहरण ।
उसी 'पतिव्रत' की खोलोगे, क्या 'तलाक' से वधशाला ॥

नहीं उचित यह नीति ! कि-जबरन कोई नियम बना डाला ।
सच कहता हूँ ! असन्तोष की, भड़क उठे ! भीषण ज्वाला ॥
किसी धर्म पर ! नहीं करें, आघात नीति वह गई कहाँ !
'हिन्दूकोड' न होगा ! होगी, 'हिन्दु धर्म' की वधशाला ॥

देश प्रेम की ! जिसके उर में, कल तक जलती थी ज्वाला ।
आज वही बन गया, हाय ! 'परमिट' पर मर मिटने वाला ।
बाप मरा था ! बिना कफन के, बेटा आज 'बजाज' बना ॥
करे 'ब्लैक' मनमाना चाहें, अमन रहे ! या वधशाला ॥

घूसखोर और चोर ! जहाँ हो, इन्तजाम करने वाला ।
फिर कैसा इन्साफ ! कि जिसका, दिल पहिले ही से काला ॥
'कांग्रेस को ! बस ऐसे ही, गुण्डों ने ! बदनाम किया ।
हाय न क्यों ? सरकार खोलती, इन दुष्टों की वधशाला ॥

मैं लीडर हूँ ! किसका डर है, जो चाहा सो कर डाला ।
है अपनी 'सरकार' मुझे फिर, रहा कौन ? कहने वाला ॥
देश, धर्म में ! लगे आग, मैं 'उल्लू' सीधा करता हूँ ।
जो बोला विपरीत ! उसी को, दिखला दूंगा ! वधशाला ॥

आज 'नुकीली' गांधी टोपी, खद्दर का कुर्ता आला ।
कल था ! अंग्रेजों का पिट्ठू, यही जुल्म करने वाला ॥
गङ्गाजी पर ! गङ्गाधर हैं, यमुना जी पर ! यमुनादास ।
इस 'अवसरवादी' लीडर को, अरे ! दिखादो वधशाला ॥

बधशाला

कोई कहता 'दलितवर्ग' की, मैं सेवा करने वाला ।
कोई कहता 'देश धर्म' हित, मैंने सर्वस दे डाला ॥
सङ्घ, अकाली, सोशलिस्ट क्या ? कम्यूनिस्ट, अवसरवादी ।
जनता के सिर 'भूत' चढ़ा कर, खुलवाते हैं बधशाला ॥

किसी किसी 'एम. एल. ए.' ने तो, है अन्धेर ! मचा डाला ।
रंगा हुआ यह 'स्यार' हमेशा, रहा खूब दिल का काला ॥
'रामराज्य' का स्वप्न देखते, उधर 'जवाहरलाल' महान् ।
इधर खोलता ! यही धूर्त हा ! रामराज्य की बधशाला ॥

डाक, तार, क्या रेल आदि पर, मैंने काबू कर डाला ।
जब चाहूँ ! पूंजीपतियों की, मिल में ! ठुकवा दूं ताला ॥
'मजदूरों के ! बल पर' ही तो, उड़ा रहा मैं गुलछर्रें ।
अभी करा 'हड़ताल' दिखा दूं, बड़ों बड़ों की बधशाला ॥

आजादी मिल गई ! हमारा, फिर भी हाय ! हृदय काला ।
करो देश उत्थान ! सभी मिल, पियो प्रेम रस का प्याला ॥
है अपनी 'सरकार' इसे ! मजबूत, बनाना सबका धर्म ।
जो इसकी जड़ करे खोखली, उसकी खोलो बधशाला ॥

कौन मिलेगा ! शुद्ध हृदय से, जग सेवा ! करने करने वाला ।
पद की इच्छा ! उसे न परहित, जिसने सर्वस दे डाला ॥
आत्म शान्ति के हित सेवा है, सेवा कुछ व्यवसाय नहीं ।
सेवक हो तो ! फिर क्यों ? सेवा, बनीं परस्पर बधशाला ॥

पद के लिये ! चुनाव ठाठ से, लड़ता है लड़ने वाला ।
यह क्या ? सेवा खाक करेगा, पहिले ही से दिल काला ॥
अरे ! नोट में वह ताकत है, मुर्दे भी दे जाते वोट ।
फूट गये कितनों के सिर ! बन, गया 'इलैक्शन' बधशाला ॥

सभी वस्तु पर ! इसीलिये था, अरे ! नियन्त्रण कर डाला ।
सबको सुविधा रहे ! कहीं भी, लगे न दुविधा की ज्वाला ॥
किन्तु ! स्वार्थी दुनियां इसके, कब महत्व को जान सकी ।
राशन के शासन में ! बोलो, खुली न किसकी वधशाला ॥

नई, नई, संस्था ! खोलकर ! जग को धोखे में डाला ।
बना लिया है ! 'धन्धा' घूमे, चन्दा चट करने वाला ॥
ध्येय नहीं कुछ भी 'जीवन' का, वे पेंदी के लोटे हैं ।
उड़ा रहे हैं मौज ! खोल कर, दान-धर्म की वधशाला ॥

देश, धर्म को छोड़ ! खोलता, कोई पागल ! मधुशाला ।
भूल गया अपने को यह क्या, जान सकेगा मतवाला ॥
है कोई ! देखेगा दिल ! दिलवाला उन दिलवालों का ।
शीश चढ़ा कर, अरे ! जिन्होंने, अमर बनाई वधशाला ॥

क्या ? जीवन भर ! लिये फिरेगा, दर दर पर ! खाली प्याला ।
तेरी तृष्णा ! नहीं मिटेगी, कितनी ही ! पीले हाला ॥
अरे शराबी ! बाँध 'कफन' सिर, मेरे पीछे पीछे चल ।
भूल जायगा ! मधुशाला को, अगर देखली ! वधशाला ॥

गला घोंट दे ! मधुबाला का, चूर ! चूर ! करदे प्याला ।
तभी तोड़ ! मधुघट को पागल, बह जाये सारी हाला ॥
कान पकड़ कर 'तोबा' करले, परमपिता से ! माँग क्षमा ।
तुझे सूझती ! मधुशाला, चल रही देश में ! वधशाला ॥

तेरा ! शराबी का जीवन है, मेरा जीवन है ज्वाला ।
उसकी प्यारी 'मधुबाला' है, मेरी आशा 'रणक-बाला' ॥
वह देता है ! 'निशा-निमन्त्रण', उषा-निमन्त्रण मैं देता ।
झूम रहा ! वह 'मधुशाला' में, घूम रहा ! मैं वधशाला ॥

कान लगाकर क्या ? सुनता है, बोतल की कुल कुल आला ।
मधुबाला को ! लिये बगल में, क्या बैठा है मतवाला ॥
बेटे का ! कर्तव्य यही क्या, दुनियां मुंह ! पर थूकेगी ।
मस्त पड़ा तू ! मधुशाला में, देख रही मां वधशाला ॥

रंगे हाथ ! क़ातिल आया आया है, लिये रक्त-रंजित भाला ।
ध्यान लगाये, सीना ताने, खड़ा 'अमर' होने वाला ॥
एक लात में ! जिस पागल का, नशा दूर हो जाता हो ।
ध्यान लगाना ! वह क्या जाने, ध्यान लगाती वधशाला ॥

क्यों ? मसजिद में गया ! अरे तू, जब है मय पीने वाला ।
क्यों ? मन्दिर में गया ! हाथ में, लिये लबालब मय प्याला ॥
क्यों कहता है ! कहीं ठिकाना, मिला न मुझसे काफिर को ।
अगर प्रायश्चित ! करना है तो, बुला रही है वधशाला ॥

बोतल खायेगी पछाड़, रोयेगा सिर धुन कर प्याला ।
तेरे दिल की ! धड़कन को, जब देखेगी साकी बाला ॥
नशा उड़ेगा ! हाथ मलेगा, और कहेगा 'बुरा' किया ।
'मधुशाला' ही पागल ! तेरी, बन जायेगी वधशाला ॥

'सोम-सुधा' को सुरा बताये, पड़ा अक्ल पर ! क्या पाला ।
'द्रोण-कलश' को मधुघट कहता, हुआ नशे में मतवाला ॥
सुरा पान का ! कहाँ समर्थन, वेदों ! को बदनाम न कर ।
अरे ! असुर क्यों ? खोल रहा है, दिव्यज्ञान की वधशाला ॥

बने रहेंगे ! मन्दिर जिनमें, नित्य जपी जाये माला ।
बनी रहेंगी ! मसजिद जिनसे, सदा आये 'अल्ला-ताला' ॥
है भारत आजाद ! देखले, आँख खोलकर ओ ! काफिर ।
सभी जगह खुल रही ! खुलेंगी, मधुशाला की वधशाला ॥

सत्य बात है ! सागर-मंथन से, जग में आई हाला ।
लेकिन ! इतना तो बतलादे, कौन 'देव' पीने वाला ॥
'सुधापान' कर ! अमर हुये सुर. असुर ! सुरा में डूब गये ।
'देवासुर' संग्राम ! बना, तेरे ! 'पुरखों' की बधशाला ॥

हमने माना ! शौक स्वाद के, हित है ! जग पीने वाला ।
भूल जाय ! दुख मय जीवन, तू ! इस कारण पीता हाला ॥
रोगी बन कर ! क्यों ? जीता है, 'मर्ज रहे' न रहे मरीज ।
पी ! आबेशमशीर ! भुलाये, दुख-मय जीवन बधशाला ॥

'यम' आये ! जब लेने को, तब ! काम नहीं देगी हाला ।
अधरों पर ! लगने से पहिले, छूटजाय कर से प्याला ॥
तेरी आंखें ! तभी खुलें ! जब, साकी ! आंख चुरायेगा ।
देखेगा ! जिस ओर ! दिखाई, देगी तुझको ! बधशाला ॥

मार छुरी ! अपने अधरों में, बना 'ओख' का ले प्याला ।
मैं भी तो लूं देख ! अथक है, कैसा तू पीने वाला ॥
बदनामी में डर कर ! पागल, जग को क्यों ? देता है दोष ।
टूट गया जिसका दिल ! उसकी, एक दवा है बधशाला ॥

जड़ काटो ! अंगूर लता की, जिससे बनती हो हाला ।
आग लगादो ! उस मिट्टी में, जिसका बनता हो प्याला ॥
हाथ जोड़ ! डालो साकी के, गला शराबी का दाबो ।
बढ़ ! मानव सन्तान रोक अब, दुर्व्यसनों की बधशाला ॥

चाहे गिरे कुत्ते ! मोरी में, दिखे पड़ा ! मुंह मतवाला ।
नहीं याद में ! वहीं पड़ा रह, थूक थूक कर जो डाला ॥
उतर जाय ! वह नशा नहीं है, यही नशा है जीवन का ।
इसने देखी ! मधुशाला, तू देख ! हमारी बधशाला ॥

नहीं है ! मेरे गल में, डाले 'सुर-बाला' माला ।
ह नहीं है ! मुझे पिलाये, जी भर अमृत का प्याला ॥
ह यही है ! मानवता के, चरणों पर दूं ! शीश चढ़ा ।
हे देखती ! आंख उठाये, दुनियाँ मेरी बधशाला ॥

मेरे आगे ! क्या गायेगा, आये तो ! गाने वाला ।
एक 'भारती' ! की वीणा है, बाकी साज ! जला डाला ॥
बेगाना ! गाना समझेगा, मस्ती समझे ! मस्ताना ।
मेरी लय में ! महाप्रलय है, जालिम ! समझे बधशाला ॥

खबरदार ! जो मेरे ऊपर, अगर किसी ने ! रंग डाला ।
रंगा हुआ हूँ ! मुझ पर कोई, रंग नहीं ! चढ़ने वाला ॥
देश, धर्म के ! दीवानों की, जलती पग पग पर होली ।
जिस दिन चाहूँ ! चला जाऊँगा, फाग खेलने बधशाला ॥

मेरे आगे ही ! रो लेवे, हो कोई ! रोने वाला ।
खबरदार ! जो मर जाने पर, अगर कहीं आँसू डाला ॥
याद रहे तो ! इतना करना, जिससे सब को याद रहे ।
बने समाधि ! वहीं पर मेरी, जहाँ बनी हो ! बधशाला ॥

दूर फेंक दो ! तुलसी दल को, तोड़ो गंगा जल प्याला ।
दुआ, फातहा, दान, पुण्य का ! मरे नाम लेने वाला ॥
मेरे मुँह में अरे ! डाल दो, एक उसी 'सतलज' का घूंट ।
जिसके तट पर ! बनी हुई है, 'भगतसिंह' की बधशाला ॥

ही ! लाश को ! हाय लगाये, जिसके हो ! कर में छाला ।
मेरी ! अर्थी में, घायल हों, हो 'कंधा' देने वाला ॥
जिसके दिल में ! आग लगी हो, वही चिता मेरी फूंके ।
कर्म करे ! तो बाँध कफन सिर, जाये सीधा बधशाला ॥

मेरा श्राद्ध ! करे तो कोई, हो ऐसा ! करने वाला ।
देश धर्म दया पर हित के हित, जिसे जलाती हो ज्वाला ॥
मांस नोंच ! निज कर से अपना, काक गिद्ध का भोज करे ।
ऐसी खोले ! जैसी खोली, 'शिव-दधीच' ने वधशाला ॥

गर्म रक्त से ! मेरा तर्पण, हो कोई करने वाला ।
'सहस-बाहु' का 'परशुराम' ने, जैसे, वंश मिटा डाला ॥
तृप्त आत्मा होगी मेरी, कहीं ! जुल्म का नाम न हो ।
जहां मिले ! कोई भी जालिम, वहीं खोल दो ! वधशाला ॥

हिन्दू हो ! या मुसलमान ! या, और किसी मजहब वाला ।
जो भी जुल्म करे ! जालिम है, करदो उसका मुंह काला ॥
मैं मानव हूँ ! बस मानव की, यही एक 'परिभाषा' है ।
करे विश्व 'कल्याण' और, खोले 'जुल्मों' की वधशाला ॥

जो कुछ समझा मैंने इतना, वीरों का यश ! लिख डाला ।
इसमें क्या अपराध ! भूल है, नहीं ! न मेरा दिल काला ॥
उन वीरों को ! उनकी पदरज, निज मस्तक पर धरता हूँ ।
देश धर्म हित खोल चुके ! या, देख चुके ! जो वधशाला ॥

वधशाला पढ़ कर भी उर में, अगर नहीं जागी ज्वाला ।
उस पाषाण हृदय में ! फिर क्या ? कह सकता कहने वाला ॥
देश धर्म हित ! मर कर होना, अमर किसी ने यदि सीखा ।
युग युग तक उस महावीर का, गुण गायेगी ! वधशाला ॥

देश धर्म औ, पर हित के हित, जिसे जलाती हो ज्वाला ।
इसी ध्येय पर ! हंसते हंसते, झूल गया ! जो मतवाला ॥
छोड़ गये 'स्मृति' विश्व में, अमर हुई 'गाथा' जिनकी ।
यहां ! महापुरुषों के अर्पण, 'विकल' उन्हीं की वधशाला ॥

[समाप्तम्]

[जिस पृष्ठ के छंद में जो कथा है उसी पृष्ठ को यहां देखिये]

[६] फ्रांस देश की स्वतन्त्रता के लिये 'देवीजोन' ने भरसक प्रयत्न किया ! अन्त को विरोधियों द्वारा वह जीवित ही जला दी गई। किन्तु वह अमर है ! फ्रांस उसके गीत गाता ही रहेगा।

नूह, नोव्वा, मनु चाहे कुछ भी कह लो उस आदि पुरुष ने संसार में बढ़ते हुए अनर्थ को देखकर सभी से कहा– तूफान आने वाला है सबका नाश हो जायगा। सभी ने उसे पागल ही समझा। उसने मछली की आकृति को देखकर एक नाव बना ली और उसी नाव में बैठा हुआ वह महाप्रलय को देखता रहा।

'हजरत मूसा' परमात्मा के सच्चे भक्त थे। वह 'तूर' नाम के पहाड़ पर रहा करते थे। एक बार उन्होंने हठ करी कि—या खुदा तू मुझे अपना जल्वा दिखा ! गैब से आवाज आई मत देख ! तुझसे नहीं देखा जायगा ! किन्तु वह न माने। यकायक तूर पहाड़ जल उठा, मूसा को गश आ गया। किन्तु मूसा और उसकी झोंपड़ी का बाल भी बांका न हुआ।

परमात्मा के मुर्दों को जिन्दा करने वाले नाम से प्रसिद्ध महात्मा को कुछ विरोधियों ने उनको काफिर बताकर फतवा दिया कि इसकी खाल खींच लो, महात्मा ने अपने आप ही अपनी खाल खींच कर उनको दे दी। कहते हैं—कि इस महान अनर्थ को देखकर सूर्य पृथ्वी पर गिरना ही चाहता था। किन्तु उन्होंने रोक दिया और तभी से उनका नाम 'शम्शतबरेज' पड़ा।

दुश्मनों से जान बचाकर, भागते हुए 'जरदस्त' ने परमात्मा को भूलकर, एक पेड़ से पनाह मांगी ! पेड़ का तना फट गया और जरदस्त उसमें छिप गया। शैतान ने बताया कि इस पेड़ के

तने में जबरदस्त है। तब आरे से उस पेड़ को चीरा गया।

[७] अनलहक़ मुझमें खुदा है! मैं खुदा हूँ! हर कोई खुदा है) इस बात को मानने वाले। महात्मा मंसूर की गहराई को न समझ कर एक बादशाह ने उनसे सिजदा कराना चाहा। मंसूर ने सिजदा न किया इसलिए उन्हें सूली पर चढ़ा दिया।

विश्व कल्याण की सद्भावना रखने वाले यूनान के महात्मा सुकरात को, अपने विरोधियों द्वारा जहर का प्याला पीना ही पड़ा।

[८] गुरु तेगबहादुर और गुरु अर्जुन को औरंगजेब ने इसी जगह टुकड़े करके जलवाया था, जहां आज देहली के चांदनी चौक में शीशगंज का गुरुद्वारा बना हुआ है।

औरंगजेब ने प्रसिद्ध वीर बैरागी को लोहे के पींजरे में कैद करके, उसके अबोध बेटे को मरवा कर, उसका कलेजा वीर बंदा को खाने के लिए दिया। जब उसने न खाया तो बर्छियों से उसका शरीर बींध कर उसे मार दिया।

महात्मा 'सरमद' दारा के गुरु थे। औरंगजेब ने सोचा कि दारा के मरने पर कहीं यह विद्रोह न कर दें—तो उसने उनपर यह अपराध लगाया कि तुम नंगे क्यों रहते हो? देहली की इसी 'जामा मसजिद' में उनका सिर काटा गया।

[१०] टीपू सुल्तान! अपने विश्वास पात्र मन्त्री की सलाह से पालकी में बैठ कर महल से बाहर निकला। मंत्री अंग्रेजों [illegible] मिला था, फौरन ही अंग्रेज सेना आ गई और उसने 'टीपू' [illegible] मार डाला।

बनारस के महाराज चेतसिंह, और बंगाल के महाराज नन्दकुमार पर झूठा आरोप लगाकर अंग्रेजों ने उन्हें मार दिय

प्लासी की लड़ाई में जब अंग्रेज बुरी तरह हार गये, तो उन्होंने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को उसके विश्वासपात्र मन्त्री 'मीर जाफर' द्वारा महल में सोते हुये मरवा डाला।

भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव डालने वाले 'लार्ड क्लाइव' पर लन्दन में कुछ लोगों ने रिश्वत लेने का आक्षेप लगाया। उसने उसी पार्लियामेंट में अपने चाकू से आत्महत्या करली।

अन्तिम मुगल सम्राट। बहादुरशाह को 'हडसन' नामक अंग्रेज ने, उसके बेटे और पोतों के, सर काट कर उसके आगे धर दिये और बोला कि यह—अंग्रेजों की देहली के बादशाह को भेंट है। जहाँ हडसन ने सर काटे थे, वह खूनी गेट अशोक की लाट के पास, लबे सड़क देहली में आज भी बना हुआ है।

[११] अवध के नवाब 'वाजिदअलीशाह' पर अंगरेजों ने झूठा दोषारोपण लगाकर। जबरदस्ती उसका राज्य छीन लिया महल लूटा, बेगमों की बेइज्जती की और उनके बच्चों को मार दिया।

वीर तांतिया टोपी, मुबारिकअली और नानासाहब और झांसी की महारानी 'लक्ष्मीबाई' भारत की स्वतन्त्रता के लिये सन् १८५७ ई० में अंगरेजों से युद्ध करती हुई स्वर्ग सिधार गई।

प्रसिद्ध देशभक्त और योगाभ्यासी सूफी अम्बाप्रसाद मुरादाबाद ही के रहने वाले थे। जब अंगरेज सरकार ने इनको पकड़ना चाहा तो यह बड़ी चालाकी से टर्की पहुँच गये। वहाँ अंगरेजी फौजों ने इन्हें पकड़ लिया। जिस दिन इन्हें तोप के मुँह से बाँध कर उड़ाया जाने वाला था तो 'यह समाधि अवस्था में निष्प्राण बैठे हुए मिले इनकी समाधि 'शिवराज' में बनी हुई है।

महाराजा रणजीतसिंह के मरते ही 'महारानी जिन्दा' को कैद करके उनके, पुत्र दलीपसिंह को अंग्रेजों ने लंदन भेज दिया। 'कोहनूर' हीरा और पंजाब का राज्य भी छीन लिया।

[१२] पूना की महारानी 'अन्नपूर्णा' बीमार पड़ी हुई थीं। तब अंग्रेजों ने उनका सब कुछ लूट कर, राज्य छीन लिया।

'रेनोड' नामक फौजी अफसर ने इसी फतहगढ शहर को जलवाया और कितने ही आदमियों को वृक्षों पर लटकाकर मारा।

अंग्रेजों ने गदर में मुसलमानों के विरुद्ध सिक्खों को लड़ाने के लिये यह कहा कि—खालसा दिल्ली का राजा होगा 'गुरु ग्रन्थ साहब' की वाणी सत्य होने वाली है। तुम इनसे बदला लो! यही मौका है। सिक्ख इस चाल को न समझ पाये।

[१३] मुरादाबाद में नज्जू खां! नवाब को जहां आज कल कचहरी बनी हुई है—इसी जगह भूने हुये चूने के कढ़ाव में बिठा कर ऊपर से पानी डाल कर अंग्रेजों ने मारा था।

अंग्रेजों ने अनेकों हिन्दू और मुसलमानों को नंगा करके नांद के टबों में दाग लगा कर, गाय और सुअर की खाल में बन्द करके, फिर उनको मन्दिरों और मसजिदों में भूना था।

गदर के सुप्रसिद्ध नेता मौलवी अहमदशाह को सहायता देने के बहाने 'पुवायां' के राजा ने अपने यहां बुला कर धोके से, उसका सिर काट लिया। जब मौलवी का सिर लेकर वह राजा इनाम पाने की इच्छा से, गोरे अफसर के पास गया तो उस अफसर ने यह कह कर कि—तेरा क्या यकीन—उसी समय उसे फांसी से मार दिया।

'[illegible]' ने इलाहाबाद में अंग्रेजों से खूब लड़ाई लड़ी।

[क्रमशः]

अन्त को यह वीर भी एक विश्वघाती द्वारा पकड़ा गया।

इटावा शहर में एक मकान के अन्दर से बीस वीरों ने गोलियां चलाकर, गोरों की एक बड़ी फौज को आगे नहीं बढ़ने दिया। तब उस मकान को तोप से उड़ा दिया गया।

[१४] अस्सी वर्ष के बूढ़े जगदीशपुर के महाराज कुँवरसिंह के हाथ में जब अंग्रेजों से, लड़ते हुये गोली लगी तो उन्होंने उसी क्षण अपने ही आप अपना हाथ काट कर गंगा में फैंक दिया।

कनाडा-अमरीका में रहने वाले 'प्रवासी' भारतवासियों को अपमानित करने वाला 'हापकिंसन' नामक एक अंग्रेज ऑफिसर था। वीर 'मेवासिंह' भरी सभा में उसको मार कर, प्रसन्नतापूर्वक फांसी के तख्ते पर! झूमते हुए स्वर्ग सिधार गये।

देश-भक्त लाला 'हरदयाल' एम० ए० देहली के रहने वाले थे। भारत की स्वतंत्रता के लिये—जीवन भर 'सशस्त्रविद्रोह' का प्रयत्न भारत से बाहर रहते हुये भी करते ही रहे।

पंजाब के प्रसिद्ध स्थान 'अजनाला' में 'कल्यादांबुर्ज' और 'कल्यादांखू' नाम का (कुंआ) अब तक बने हुये हैं। 'कूपर' ने इसी कूएं और बुर्ज में अनेक हिन्दुस्तानियों को मारा था।

[१५] 'खुदीराम बोस' एक सोलह वर्षीय बंगाली युवक था। इनको एक अंग्रेज पर बम फैंकने के अपराध में फांसी हुई तो यह वीर! हंसते-हुये, गीता का पाठ करता हुआ स्वर्ग सिधार गया।

महाराष्ट्रीय ब्राह्मण 'चाफेकर बन्धु' तीन सगे भाई थे, 'रैंड' नाम* अंग्रेज आफिसर ने उन दिनों बड़ा जुल्म कर रक्खा था! उसको मारने के अपराध में! तीनों को फांसी हुई।

जब अंग्रेजों ने पंजाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी! वीर

'करतारसिंह' को फाँसी पर चढ़ाया तो उसने अपने हाथ से ! अपने गले में फंदा डाल कर प्रसन्नतापूर्वक प्राण दे दिये ।

प्रसिद्ध देशभक्त वीर 'दामोदरसावरकर' को जब अंग्रेज नजरबन्द करके जहाज में लेजा रहे थे—तो यह वीर ! अवसर पाकर समुद्र में कूद पड़े ! काफी तैरने पर किनारे लगे ।

ला० हरदयाल द्वारा भेजे गये शस्त्रों से भरे जहाज की 'बालेश्वर' में रक्षा करते हुए क्रांतिकारी 'यतीन्द्रनाथमुकर्जी' अपने साथियों समेत अंग्रेजी फौज से लड़ते हुये शहीद होगये ।

[२६] देहली के दरबार में 'लार्ड हार्डिंग' पर बम फैंक कर रास-बिहारी बोस' जापान चले गये और वहीं से भारतीय स्वतन्त्रता का प्रयत्न करते रहे । अन्त में नेताजी के साथ आजाद हिन्द फौज में अंगरेजों से लड़ते हुए, स्वर्ग सिधारे ।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी 'सत्येन्द्रनाथ' को जब फांसी लगी तो उनकी माता ने उनसे मिलना चाहा । सत्येन्द्र ने कहा कि मैं—एक शर्त पर माता से मिल सकता हूँ ! यदि वह हंसती हुई मुझ से मिले ! उस वीर प्रसूता ने भी वैसा ही किया ।

'बीणादास' नामक एक बङ्गाली युवती ने ! भरी सभा में बङ्गाल के गवर्नर को उसके जुल्मों के कारण गोली से मार दिया ।

[२७] रूस के बादशाह 'ज़ार' के अत्याचारों से तंग आकर प्रजा ने विद्रोह कर दिया और ज़ार को मार दिया ।

[२८] शिमर, नाम का एक मुसलमान सरदार जो कि हज़रत मुहम्मद साहब का उसी दिन से शत्रु था । 'जंग-कर्बला' में उसी ने हज़रत के नवासों को नमाज़ पढ़ते हुये मारा था ।

[२९] ईद के दिन हज़रत 'इब्राहीम' ने अपने बेटे हज़रत 'इस्माईल' को खुदा के नाम पर बलिदान किया था ।

* सूखा पीपल *

[भारतवर्ष की पुनीत वीर-भूमि राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थ प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप की रणस्थली 'हल्दीघाटी' में खड़ा हुआ एक विशालकाय 'सूखा पीपल' बीते युग की याद कराता है ।]

जयजननी हे जन्मभूमि शुभ, जय भारतमाता सुखधाम ।
जय वसुन्धरा वीर प्रसूता, वीर भूमि शत कोटि प्रणाम ॥
तेरे यश वैभव की गाथा, अब तक गाता सकल जहान ।
धर्म भूमि जय कर्म भूमि जय, स्वर्ण भूमि जय राजस्थान ॥
इसी वीरजा के रज कण में, है असंख्य वीरों की छाप ।
देश धर्म हित हँसते हँसते, जो सह गये अमित संताप ॥
देख रहा है अपलक किसकी, राह मौन अब हल्दीघाट ।
डूब रहा किस सुखदस्मृति में, गर्वित ऊँचा किये ललाट ॥
एक बार मैं ! गया देखने, इसी तीर्थ का दृश्य ललाम ।
जीवन का आनन्द मिला तब, पाया क्षणिक हृदय विश्राम ॥
घूम गये बर्बस आखों में, वह अतीत के चित्र पुनीत ।
देख रहा था वर्तमान को, दीख रहा था मुझे अतीत ॥
तन जर्जर हो चुका कभी का, अन्तस्थल थे घाव कराल ।
था सूखे से खड़ा ताल तट, सूखा पीपल एक विशाल ॥
विषम वेदनाओं से पीड़ित, भरे आह, के साथ उसास ।
उसकी था हर एक सांस में, सदियों का सोया इतिहास ॥
उसे देखकर मेरे मन में, भांति भांति के उठे विचार ।
ली प्रसान्त सागर ने करवट, सहसा आया भाटा ज्वार ॥
मैंने पूछा अरे ! बता क्या, ऐसा कौन ? सहा आघात ।
बोला बोल, सुनेगा मुझसे, क्या तू मेरे मन की बात ॥
हाँ हाँ कह कर बैठ गया मैं, नीचा सिर करके चुपचाप ।
और ध्यान में डूब उसी के, सुना मूक का मूक प्रलाप ॥
"गूंज उठी सहसा धीरे से, तब गम्भीर गिरा अभिराम ।
करुण कथा सुनने से पहिले, अपने विकल हृदय को थाम ॥

सूखा पीपल

मैंने कहा विकल तो मैं हूँ, तुम क्यों विकल हुए हो भ्रात ।
एक राह के ! दोनों राही, ऐसा कुछ होता है ज्ञात ॥
निःसंकोच सभी कह डालो, क्यों होते हो ! मित्र अधीर ।
किसी विकल की और विकलही, खूब समझ सकता है पीर ॥

तब फिर मैंने आतुर होकर, देखा अपलक उसकी ओर ।
अश्रु बिन्दु गिर पड़े और, होगया हृदय आनन्द विभोर ॥
कहने लगा नहीं कह सकता, आया किसका हृदय पसीज ।
कौन कहाँ से किस विधि लाया, वह मेरा नन्हा सा बीज ॥

मुझे 'गर्भ' में लेकर मेरी, माता को था हर्ष महान ।
अरे ! जीव निर्जीव सभी की, रक्षा करते हैं भगवान ॥
इस प्रकार ही तो फैला है, जग में यह माया का जाल ।
समय हुआ जब पूरा मेरा, फूट पड़ा 'अंकुर' तत्काल ॥

फिर तो ! बढ़ना ही बढ़ना था, बढ़नेकी भी थी क्या बात ।
दिन दूना औ रात चौगुना, बढ़ा सौगुना मैं दिन रात ॥
माँ हर्षित होती थी मेरी, देख देखकर कोमल पात ।
मेरी 'यौवन' के आगे थी, किसी फूल की क्या औकात ॥

कितनी ही ! गर्मी देखी है, कितने ही ! देखे हैं शीत ।
कितनी ही बरसात बिताई, बना गई मुझको भयभीत ॥
झंझा के झोंके भी देखे, सही 'बवंडर' की भी मार ।
कितने ही पतझड़ देखे हैं, देखी कितनी बार बहार ॥

कभी चाँदनी छिटकी देखी, कभी घना ! अंधेरी रात ।
कितनी ही ! संध्या देखी है, कितने ही देखे हैं प्रात ॥
अपने नन्हे पता जन्म दो, मैं कितना ही बना विशाल ।
किन्तु अंत ! आया काल, मेरी तो, हो गई निढाल ॥

सूखा पीपल

मुझे याद है जब चर-वाहे, लिए साथ पशुओं के गोल ।
मुझे दूर से देख ! प्रेम वश, मेरी जय उठते थे बोल ॥
उनके साथ चले आते थे, खेल खेलने भोले बाल ।
पीपी बजा कभी पत्तों की, बेल बनाकर किया कमाल ॥
कोई दाढ़ी पकड़ लटकता, कोई रहा डाल पर भूल ।
कितना हर्ष मुझे होता था, जाता था अपने को भूल ॥
मेरी छाया में, पाते थे, जीव अनेकों ही ! विश्राम ।
यही सोचता रहता निशदिन, आया चलो किसी के काम ॥
दुख देते थे ! सह लेता, पर कभी न कहता आधी बात ।
बिना बात ही, अरे अनेकों, तोड़ डालते 'टहनी' पात ॥
मैं उनको अपना समझा था, वृथा किया मैंने अभिमान ।
महा स्वार्थी यह दुनियां है, लिया आज सबको पहिचान ॥
मुझे और क्या ? दे जाते थे, कर जाते 'गोबर' का ढेर ।
अब जो यह 'पशु' नाक सकोड़े, चलते हैं मुझ से मुँह फेर ॥
अपनी ही दयनीय दशा पर, आज हुआ मैं दुखित अपार ।
प्रभु ही जाने कहाँ गया हा ! वह मेरा 'स्वर्णिम' संसार ॥
मुझे याद है ! विविध भाँति के, पक्षी नित करते थे गान ।
जय जय प्यारी जन्म भूमि शुभ, जय जय प्यारा राजस्थान ॥
उछल कूद करके डाली पर, कलरव करते गाते गीत ।
यहीं रहेंगे ! नित्य हमारा, है तू ! हम तेरे हैं मीत ॥
जिसका जहां यहां दिल चाहा, वहीं बनाया अपना नीड़ ।
सांझ सकारे चहल पहल क्या, खूब लगी रहती थी भीड़ ॥
किन्तु आज हा ! एक न आता, निकलें दूर से ही सब जांय ।
मुझपर आँख लगाने वाले, अब क्यों मुझसे आँख चुरांय ॥

सूखा पीपल

अरे! जहां 'स्वर्गीय' गान था, आज बोलने लगे उलूक ।
जिनकी हूक प्रतिक्षण करती, मेरे मूक हृदय के टूक ॥
सभी घृणा करते हैं मुझ से, आज हुआ क्या मेरा हाल ।
ठीक बात है कौन मिटाये, विधि ने अङ्क लिखा जो भाल ॥

यह परिवर्तन शील जगत है, कभी निशा है कभी प्रभात ।
सुख में साथी! रहे सैकड़ों, दुख में कौन? पूछता बात ॥
अब समझा हूँ! निष्ठुर जग में, है सब मुँह देखे की प्रीत ।
समय समय की भली रागनी, समय समय के सुन्दर गीत ॥

मुझे याद है! जब मंजिल से, थका पथिक गर्मी से ऊब ।
मेरी शीतल छाया में, सोगया! बेचकर घोड़े खूब ॥
झूम झूम कर तब डालों से, उसको करता रहा बयार ।
नित्य अतिथि की सेवा करना, रहा यही मेरा व्यवहार ॥

आज! कुल्हाड़ा रख कन्धे पर, वही! काटने आते हाय ।
महा कृतघ्नी! नर पिशाच, इन दुष्टों से भगवान बचाय ॥
अरे स्वार्थ की भी तो हद है, बेची है! लाखों की लाख ।
तुले हुए हैं फिर भी निष्ठुर, मेरी क्यों? करने को राख ॥

मुझे याद है! यह जो मेरे, है समीप सूखा सा ताल ।
आज भले ही कुछ भी हो पर, किसी समय था यही विशाल ॥
पानी पीते! खूब न्हाते, जीव अनेकों! करते सैर ।
खड़ा कहीं 'सारस' का जोड़ा, रही कहीं 'मुर्गा भी' तैर ॥

हम दोनों ही, मित्र हमेशा, दुख सुख का रखते थे ध्यान ।
करते रहे परस्पर छाया, पानी का आदान प्रदान ॥
प्रेम निभाना! सभी जानते, क्या तालाब और क्या रूख ।
एक दूसरे ही के दुख में, गये आज हम दोनों सूख ॥

सूखा पीपल

मुझे याद है ! जब पूजन को, आती थीं सुकुमारी बाल ।
हर्षित होकर ! मेरे गल में, पहनाती फूलों की माल ॥
चंदन छिटका दीप जलाया, परिक्रमा की गाया गान ।
प्रेम सहित दिल खोल चढ़ाया, फिर मुझ पर मेवा मिष्ठान ॥

श्रद्धा भक्ति को देख देख कर, होता मुझको हर्ष अपार ।
मेरे मन को बांध रहे, दस पांच ! सूत के कच्चे तार ॥
मैं समझा था कितनी भोली, कैसा इनका हृदय उदार ।
विश्व बीच क्या यही प्रेम की, साक्षात प्रतिमा साकार ॥

यही शारदा ! अन्नपूर्णा, यही ! रमा, भरतीं भण्डार ।
यही भवानी ! समय जान कर, कभी उठा लेतीं तलवार ॥
निसन्देह जहां नारी का, होता है आदर ! सत्कार ।
ऋद्धि सिद्धि भरपूर वहीं पर, करें देवता नित्य विहार ॥

किन्तु स्वप्न में भी तो मैंने, किया न ऐसा कभी विचार !
हृदय हीन हैं ! यही देवियाँ, और करेंगी ! दुर्व्यवहार ॥
अब समझा हूँ ! नारी का भी, होता कितना हृदय कठोर ।
आज इन्हीं के हाथों द्वारा, चला हाय ! चूल्हे की ओर ॥

बड़े बड़े पंडित आते थे, मांग रहे मुझसे वरदान ।
एक पैर से खड़े खड़े ही, जपते ! थे यह मंत्र महान ॥
'मूले ब्रह्मा ! विष्णु तना है, शाखा में हरते हर त्रास ।
नमो ब्रह्म देवाय ! तुम्हारे, पात पात में देव निवास ॥

जगत गुरू कर रहे दंडवत, आंख मींच ! कर जोड़े हाथ ।
सकल विश्व के यश वैभव का, झुका हमारे पग पर माथ ॥
हर्षाता मैं ! यही देख कर, भाग्य मिला कैसा अनमोल ।
दुनियां भर के किसी वृक्ष को, आंख तले कब लाया बोल ॥

[क्रमशः]

किन्तु आज हा ! उन अपनों की, देख रहा हूँ मैं करतूत ।
जग से कहते फिरते ! रहता, अब सूखे पीपल पर भूत ॥
मैं क्या समझा था क्या निकले, छोड़ चुका अब सब की आस ।
कौन शत्रु है कौन मित्र है, किसका कौन करे विश्वास ॥

मुझे याद है ! मेरा भारत, जगद् गुरू जग का सिर मौर ।
अपनी उपमा रहा आप ही, कौन हुआ इसके सम और ॥
धन बल विद्या पूर्ण ज्ञान से, खुले हुये थे हृदय कपाट ।
पढ़ा रहा था मानवता का, अरे यही ! तो जग को पाठ ॥

दया क्षमा संतोष न्याय था, कभी न होता भ्रष्टाचार ।
रहा सदा निस्वार्थ भाव से, त्याग तपस्या पर उपकार ॥
प्रेम परस्पर सद्विचार शुभ, उच्च भावना अच्छे कर्म ।
सुखद शान्ति में गूंज रहा था, सत्य अहिंसा परमोधर्म ॥

मुझे याद है सुयश कीर्ति शुभ, विजय पताका की फहरान ।
मुझे याद हैं अमर कहानी, वीरों के अनुपम बलिदान ॥
मुझे याद है ! धाक जमी थी, रही खूब ही तूती बोल ।
देख चुका हूँ ! रजपूतों की, रजपूती मैं भी दिल खोल ॥

करी प्रतिज्ञा ! जो कुछ उसको, रहे निभाते ही रणधीर ।
अपनी बात नहीं जाने दी, दिया बात हित भले शरीर ॥
विपदाओं से ! रहे खेलते, देश धर्म हित वह बलवान ।
करता अब तक यही अर्वली, अपने पुरखों का गुणगान ॥

देख चुका हूँ ! बाप्पा रावल, देख चुका उसकी सन्तान ।
कीर्ति खम्ब को बनते देखा, कुम्भा का जो अमर निशान ॥
उस खुमान की शान देखली, स्वाभिमान था बिस्वे बीस ।
देख चुका हम्मीर हठीला, दिया ईश को जिसने शीश ॥

किले बहुत से देखे होंगे, किन्तु यहाँ सब का सिर मौर ।
क्या देखा दुनियां में आकर, अगर न देखा रणथम्भोर ॥
देख चुका हूँ ! जब खिलजी ने, हमले किये अनेकों बार ।
मुँह की खानी पड़ी, हो गये, सभी यत्न उसके बेकार ॥

खिलजी से मिल गया लालची, रसद दरोगा घाती हाय ।
होते हुये रसद के बोला, राणा अब कुछ करो उपाय ॥
'रसद नहीं है रसद नहीं है' मचा किले में सहसा शोर ।
शीश हथेली रख जौहर को, निकल पड़े सब होते भोर ॥

खूब लड़े दिल खोल सूरमां, यवन छोड़ भागे मैदान ।
उन वीरों ने लिये छीन, खिलजी के झंडे और निशान ॥
काले झंडे देख ! चिता में, कूदीं हाय ! अनेकों बाल ।
रणत भँवर में जाग उठी थी, वही अमर जौहर की ज्वाल ॥

देख चुका हूँ ! राणा सांगा के, सीने में अस्सी घाव ।
मुँह कब मोड़ा समर भूमि से, रहा सदा लड़ने का चाव ॥
देख चुका हूँ जब कमला ने, राखी भेज लिखा सब हाल ।
वीर हिमायूं भगिनी की ! रक्षा को, दौड़ पड़ा तत्काल ॥

देखा है 'बनवीर' नीच को, दया न उसको आई हाय ।
देख चुका हूँ पन्ना मां को, लिया 'उदय' को साफ बचाय ॥
रही देखनी ! सब कुछ फिर भी, रही विचारी साधे मौन ।
तेरे जैसा ओ बड़भागिन, 'अब 'बलिदान' करेगा कौन ॥

देख चुका हूँ ! अपना ही था, स्वयं नमूना अपने आप ।
दृढ़ता साहस स्वतंत्रता की, दिव्य मूर्ति वह वीर-प्रताप ॥
किया कठिन संघर्ष न छोड़ी, अंतकाल तक अपनी आन ।
उस नरपुंगव की गाथा पर, किसे नहीं हो क्यों अभिमान ॥

देखा है ! जब लेने आया, मानसिंह राणा का हाल ।
था भोजन का समय उपस्थित, किया गया भोजन तत्काल ॥
तब राणा ने ! जान बूझ कर, किया न भोजन उसके साथ ।
कहला दिया ! नहीं आ सकते, राणा का दुखता है माथ ॥

देख चुका हूँ लाल होगया, सुन कर मानसिंह यह बात ।
अभी 'दवा' लेकर आता हूँ, भोजन होगा तत्पश्चात् ॥
देख चुका हूँ ! तब राणा ने, कहा गर्व से हाथ उठाय ।
अपने बहनोई 'अकबर' को, लाना अपने साथ लिवाय ॥

अरे बोल तू ! राजपूत कब, छोड़ दिया जब तूने धर्म ।
कायर कुत्ते 'वंश' कलंकित, करते हुये न आई शर्म ॥
मेरे जीते जी ! तू मेरे, साथ करे भोजन अन्धेर ।
कुत्तों के संग कुत्ते खाते, साथ 'शेर' के खाते शेर ॥

देख चुका हूँ इस घाटी में बही, रक्त की थी जब धार ।
देख चुका चेतक की टापें, देख चुका भाले की मार ॥
खाते रहे, घास की रोटी, देखी फिर भी शक्ति अपार ।
अकबर से वैभव शाली से, उसने कभी न मानी हार ॥

देख चुका हूँ ! जब राणा ने, भेज दिया दिल्ली को दूत ।
कह देना अकबर से जाकर, रखे हौसले को मजबूत ॥
अरे ! हार मैं क्या मानूंगा, ले दिल के अरमान निकाल ।
कभी न आया क्यों डरता है, लड़ने को आये तत्काल ॥

दिल्ली पहुँचा दूत भरा था, अकबर का उस दम दरबार ।
चला गया बे खौफ़ न उसने, जान बूझ कर किया जुहार ॥
आंख चढ़ा कर अकबर बोला, ओ कमीन कम जर्फ गुलाम ।
क्या मालूम नहीं ! करना है, तुमको फर्शी यहाँ सलाम ॥

[छप्पन]

खूब जानता हूँ ! वह बोला, मुझको है 'पगड़ी' का ध्यान ।
यह उसने दी जिसने तेरा, चूर किया अब तक अभिमान ॥
मेरा क्या है ? मैं कुत्ता हूँ ! जो टुकड़ा दे उसके साथ ।
इस पगड़ी के सिर पर होते, लेकिन नहीं झुकेगा माथ ॥

मन मसोस रह गया वहीं पर, अकबर सहसा हुआ उदास ।
कुछ ही देर बाद फिर मुँह से, निकल पड़ा बरबस शाबाश ॥
लगा सोचने ! मन ही मन में, जिसके नौकर इतने वीर ।
उस राणा को अरे ! जीतना, बड़ा कठिन है टेढ़ी खीर ॥

रण-स्थली में गर्म रक्त से, धोते देखा ! उसे शरीर ।
घास पात का बना बिछौना, सोता रहा यहीं रण धीर ॥
देख चुका हूँ ! सर के नीचे, तकिया क्या ? पाषाण कठोर ।
फिर भी प्रति पल स्वतंत्रता की, लेता उसका हृदय हिलोर ॥

देख चुका हूँ ! बन बिलाव, लेगया हाय ! जब रोटी छीन ।
निरख अबोध सुता को रोती, राणा का मन हुआ मलीन ॥
देख चुका हूँ ! बोल उठे थे, नहीं सहूँगा अब संताप ।
शीश झुकायेगा 'अकबर' के, आगे अपना आज प्रताप ॥

देख चुका हूँ भेज दिया था, अकबर को लिख कर तत्काल ।
देख चुका हूँ पृथ्वीसिंह को, ली सब बिगड़ी बात संभाल ॥
लिखा अरे क्या ? आज मिटेगी, उन ऊँची मूँछों की शान ।
जिनके बल पर अब भी गर्वित, है भूतल में राजस्थान ॥

सीख लिया है तुमने भी क्या, वंश कलंकित करना पाप ।
शीश झुकाना कैसा राणा, तिल तिल करके मिटना आप ॥
रहा नहीं क्या आज तुम्हें हा, अपने भुजबल पर विश्वास ।
और अधूरा ही छोड़ोगे, क्या स्वतंत्रता का इतिहास ॥

देख चुका हूँ ! पढ़ा पत्र को, आया था जब रक्त उबाल ।
राजस्थान केशरी ने तब, मारी थी भुज ठोक उछाल ॥
उसी रंग में ! उसी ढंग से, लड़ता रहा हमेशा वीर ।
पीछे पैर हटा ही कब था, जब तक उसका रहा शरीर ॥

देख चुका हूँ ! जब सलीम का, बचा न जाने कैसे भाल !
मुगलों के घिर गये गोल में, राणा भी हो गये निढाल ॥
तब 'मन्ना' बलि होते देखा, राणा का रख शीश निशान ।
'भामाशाह' तभी देखे थे, जन्म भूमि हित करते दान ॥

देख चुका हूँ ! जब राणा के, पीछे लगे मुगल थे चार ।
जैसे भी हो आज घेर कर, ले राणा का शीश उतार ॥
देख दृश्य यह शक्तिसिंह के, भरा हृदय भाई का प्यार ।
अवसर पाकर उन दुष्टों को, दिया वीर ने सहसा मार ॥

देख चुका जब दोनों भाई, मिले परस्पर भुजा पसार ।
देख चुका हूँ तङ्ग खोलते, ही चेतक खा गिरा पछार ॥
रोते देखा है ! राणा को, मलते देखा ! दोनों हाथ ।
अरे दैव ! निर्दयी अभी तो, कुछ दिन और निभाता साथ ॥

पुत्र 'अमर' के सिर में देखा, लगा झोंपड़ी का जब बाँस ।
'चक्कर खाकर गिरा' हुआ तब, राणा का मन हुआ उदास ॥
मैं समझा था इसे और कुछ, देख लिया कितना बलवान ।
ठीक बात है वीरों की हा, सदा हुई कायर सन्तान ॥

रजपूती का नाम गया अब, डूब गया मेरा भी नाम ।
जन्म भूमि मेवाड़ रहेगी, क्या ? मुगलों की और गुलाम ॥
अन्त समय ! लेते देखा है, थाम कलेजा ठण्डी साँस ।
निकल सकी कब रही खटकती, पराधीनता की उर फाँस ॥

सूखा पीपल

देख चुका हूँ ! जब राणा ने, यहीं किया अन्तिम दर्बार ।
राजपूत हो गये इकट्ठे, आये सभी 'भील' सर्दार ॥
पड़े पड़े मृत्यु शैय्या पर, तब राणा ने कहा पुकार ।
नहीं कहूँगा बार बार बस, कहता हूँ यह अन्तिम बार ॥

एक बात से महा दुखी हूँ, तड़प रहे हैं तन में प्राण ।
कौन ! हमारे पीछे मारे, अकबर की छाती में बाण ॥
है कोई क्या ? वीर शेष अब, करे प्रतिज्ञा हाथ उठाय ।
जो अपनी 'मेवाड़ भूमि पर, दे अपना सर्वस्व चढ़ाय ॥

सभी मौन थे सोच रहे थे, वीर गये सब हिम्मत हार ।
शक्तिसिंह की सुता एक दम, बोल उठी ! किलकारी मार ॥
खून पिये अकबर का मेरी, 'आपा' देखो यही कटार ।
सुनी 'किरण' की अटल प्रतिज्ञा, राणा सुरपुर गये सिधार ॥

'राणा सुरपुर गये' सुनी जब, अकबर ने 'दिल्ली' में बात ।
आंसू निकल पड़े, आंखों से, किया हृदय से पश्चाताप ॥
बन्द लड़ाई करो, बनी ही, रहने दो राणा की आन ।
मुझसे कौन लड़ेगा अब तो, शून्य हो गया राजस्थान ॥

देख चुका, टूटा इक तारा, देख चुका हूं कण्ठी भाल ।
देख चुका गोपाल भरोसे, गरल पान कर हुई निहाल ॥
देख चुका हूँ, जब ठुकराई, गई ठोकरों से वह हाय ।
देख चुका हूँ, जब मीरा की, करते थे भगवान सहाय ॥

अरे पद्मनी के जौहर की, कैसे भूल जाऊं मैं आग ।
स्वाभिमान निज देश धर्म पर, जीते जी दे गई सुहाग ॥
डाल नाक में दी नकेल भी, गिने चुने वीरों के साथ ।
गोरा बादल रण स्थली में, करते देखे दो दो हाथ ॥

देख चुका हूँ ! पढ़ा पत्र को, लाया था जब रक्त उबाल ।
राजस्थान केशरी ने तब, मारी थी भुज ठोक उछाल ॥
उसी रंग में ! उसी ढंग से, लड़ता रहा हमेशां वीर ।
पीछे पैर हटा ही कब था, जब तक उसका रहा शरीर ॥

देख चुका हूँ ! जब सलीम का, बचा न जाने कैसे भाल !
मुगलों के घिर गये गोल में, राणा भी हो गये निढाल ॥
तब 'मन्ना' बलि होते देखा, राणा का रख शीश निशान ।
'भामाशाह' तभी देखे थे, जन्म भूमि हित करते दान ॥

देख चुका हूँ ! जब राणा के, पीछे लगे मुगल थे चार ।
जैसे भी हो आज घेर कर, ले राणा का शीश उतार ॥
देख दृश्य यह शक्तिसिंह के, भरा हृदय भाई का प्यार ।
अवसर पाकर उन दुष्टों को, दिया वीर ने सहसा मार ॥

देख चुका जब दोनों भाई, मिले परस्पर भुजा पसार ।
देख चुका हूँ तङ्ग खोलते, ही चेतक खा गिरा पछार ॥
रोते देखा है ! राणा को, मलते देखा ! दोनों हाथ ।
अरे दैव ! निर्दयी अभी तो, कुछ दिन और निभाता साथ ॥

पुत्र 'अमर' के सिर में देखा, लगा झोंपड़ी का जब बाँस ।
'चक्कर खाकर गिरा' हुआ तब, राणा का मन हुआ उदास ॥
मैं समझा था इसे और कुछ, देख लिया कितना बलवान ।
ठीक बात है वीरों की हा, सदा हुई कायर सन्तान ॥

रजपूती का नाम गया अब, डूब गया मेरा भी नाम ।
जन्म भूमि मेवाड़ रहेगी, क्या ? मुगलों की और गुलाम ॥
अन्त समय ! लेते देखा है, थाम कलेजा ठण्डी साँस ।
निकल सकी कब रही खटकती, पराधीनता की उर फाँस ॥

सूखा पीपल

देख चुका हूँ ! जब राणा ने, यहाँ किया अन्तिम दर्बार ।
राजपूत हो गये इकट्ठे, आये सभी 'भील' सर्दार ॥
पड़े पड़े मृत्यु शैय्या पर, तब राणा ने कहा पुकार ।
नहीं कहूँगा बार बार बस, कहता हूँ यह अन्तिम बार ॥

एक बात से महा दुखी हूँ, तड़प रहे हैं तन में प्राण ।
कौन ! हमारे पीछे मारे, अकबर की छाती में बाण ॥
है कोई क्या ? वीर शेष अब, करे प्रतिज्ञा हाथ उठाय ।
जो अपनी 'मेवाड़ भूमि पर, दे अपना सर्वस्व चढ़ाय ॥

सभी मौन थे सोच रहे थे, वीर गये सब हिम्मत हार ।
शक्तिसिंह की सुता एक दम, बोल उठी ! किलकारी मार ॥
खून पिये अकबर का मेरी, 'आपा' देखो यही कटार ।
सुनी 'किरण' की अटल प्रतिज्ञा, राणा सुरपुर गये सिधार ॥

'राणा सुरपुर गये' सुनी जब, अकबर ने 'दिल्ली' में बात ।
आंसू निकल पड़े, आंखों से, किया हृदय से पश्चाताप ॥
बन्द लड़ाई करो, बनी हो, रहने दो राणा की आन ।
मुझसे कौन लड़ेगा अब तो, शून्य हो गया राजस्थान ॥

देख चुका, टूटा इक तारा, देख चुका हूं कण्ठी माल ।
देख चुका गोपाल भरोसे, गरल पान कर हुई निहाल ॥
देख चुका हूँ, जब ठुकराई, गई ठोकरों से वह हाय ।
देख चुका हूँ, जब मीरा की, करते थे भगवान सहाय ॥

अरे पद्मनी के जौहर की, कैसे भूल जाऊं मैं आग ।
स्वाभिमान निज देश धर्म पर, जीते जी दे गई सुहाग ॥
डाल नाक में दी नकेल थी, गिने चुने वीरों के साथ ।
गोरा बादल रण-स्थली में, करते देखे दो दो हाथ ॥

रहा उचित ! जो सदा वीर को, वही कर्म करते थे वीर ।
राजसिंह को मैंने देखा, चंचल की सब हरते पीर ॥
मुंडमाल गल डाल लड़ा फिर, चूड़ावत सब मोह बिसार ।
भेज दिया था वीर बधू ने, निज पति को निज शीश उतार ॥

देख चुका हूँ उस ! बूढ़े ने, भुला दिये थे होश हवास ।
बचा लिया स्वामी के सुत को, धन्य वीरवर दुर्गादास ॥
हर हर हर हर महादेव की, खूब सुनी है जय जय कार ।
केसरिया बाने को पहिने, ले दोनों कर में तलवार ॥

डूंग जवाहर जाहर तेजा, तोगा 'पाबूजी' राठौर ।
अमरसिंह औ रामसिंह का, यश गाता अब तक नागौर ॥
शीश हथेली, धरे सूरमां, करते देख चुका मैदान ।
वीर वीरता का पालन कर, रहे छोड़ते रण में प्राण ॥

देख चुका हूँ ! जहांगीर को, शाहजहां का भी व्यवहार ।
फिर देखी 'औरंगजेब' की, वह मैंने खूनी तलवार ॥
वीर शिवाजी को देखा है, रखी धर्म हिन्दू की लाज ।
जिसके बल पर हिन्दू जीवित, चोटी और जनेऊ आज ॥

मुझे याद है ! जली आग में, हुई 'जहांनारा' बीमार ।
हुआ नहीं आराम किया था, सब प्रकार उसका उपचार ॥
तब अंग्रेज डाक्टर 'हैमल्टन' ने फौरन किया इलाज !
होने पर आराम हो गया, शाहजहाँ उसका मुहताज ॥

अरे ! यही तो था भारत में, सर्व प्रथम आया अंग्रेज ।
शाहजहाँ से मन मानी, लिखवाली उसने दस्तावेज ॥
फिर क्या था ! वह धीरे धीरे, करने लगा खूब व्यापार ।
भारत में अंग्रेज आ गये, कुछ दिन पीछे कई हजार ॥

सूखा पीपल

चाल बाज ! मक्कार धूर्त, इन 'गोरों' ने फैला कर जाल ।
इसे लड़ाया उसे मिलाया, अपना मतलब लिया निकाल ॥
जीत लिया बंगाल अवध को, मार दिया टीपू सुल्तान ।
कितने ही ! राजा नवाब का, बिन अपराध किया अपमान ॥

'पीर अली' तात्या मुबारिक, नाना साहब ! बाजीराव ।
झाँसी की रानी के उर में, लगा हुआ था गहरा घाव ॥
जाग उठा बेचैन हिन्द, सन् सत्तावन है मुझ को याद ।
किन्तु हमारी फूट हमीं को, कर बैठी सब विध बरबाद ॥

मुगल राज का अन्त कर दिया, करके कैद बहादुर शाह ।
क्या कुछ नहीं किया हडसन के, अब तक खूनी गेट गवाह ॥
किसका डर था फिर मनमाने, किये प्रजा पर अत्याचार ।
फांसी देकर हाय ! अनेकों, दिया देश भक्तों को मार ॥

देखा है ! ऋषि दयानन्द को, की बुलन्द जिसने आवाज ।
कितना ही अच्छा हो फिर भी, होता बुरा विदेशी राज ॥
निष्ठुर जग उस महापुरुष को, लेकिन कहाँ सका पहिचान ।
ठीक दिवाली को भारत का, बुझा दिया हा ! दीप महान् ॥

फिर देखा भगवान 'तिलक' ने, खूब लगाई थी फटकार ।
हम लेंगे स्वराज हमारा, जन्म सिद्ध है यह अधिकार ॥
हिन्दू मुस्लिम झगड़ों की तब, डाली गोरों ने बुनियाद ।
मरें कटें आपस में ! लेकिन, भारत कभी न हो आजाद ॥

फिर तो ! बढ़ती गई सभी के, उर में आजादी की आग ।
मरे अनेकों अरे साक्षी, अब तक 'जलियांवाला' बाग ॥
देख दशा आरत भारत की, हृदय हुआ जा' दुखित अपार ।
तब बापू ने सत्य अहिंसा, का पशुबल पर किया प्रहार ॥

सूखा पीपल

मुझे याद है ! धूल आंख में, झोंक गया शेरे बंगाल ।
फौज बना आजाद हिन्द, कर दिया वीर ने खूब कमाल ॥
कर्मवीर नेता 'सुभाष' ने, दिया हिन्द पर हमला बोल ।
काँप गये अंग्रेज ! ब्रिटिश, सरकार हुई तब डावां डोल ॥

जाग उठी थी तब भारत में, महा क्रांति की भीषण ज्वाल ।
'करो मरो' के मूल मंत्र का, वह प्रभाव देखा तत्काल ॥
गये जान पर खेल ! सभी, क्या बालक बूढ़े और जवान ।
नहीं रहेंगे ! हम गुलाम, आजाद करेंगे हिन्दुस्तान ॥

देख चुका हूँ ! जब जिन्ना के, चढ़ा शीश पर था शैतान ।
भारत के टुकड़े कर डाले, अलग बनाया पाकिस्तान ॥
कैसे भूलूं ! अंग्रेजों की, चाल रहेगी मुझको याद ।
आजादी देने से पहिले, खूब किया ! हम को बरबाद ॥

अरे सात सौ ! थीं रियासतें, और बुरा था सबका हाल ।
उसकी हिम्मत देखो जिसने, लिया कठिन यह भार संभाल ॥
तानाशाही मिटा वीरवर, खेल गया क्या अद्भुत खेल ।
था महान नीतज्ञ निपुण, वह 'लौहपुरुष' सरदार पटेल ॥

मुझे आज दुख होता है, इन राजाओं की दशा निहार ।
अपनी करनी का फल पाया, खूब किया था अत्याचार ॥
दीनबन्धु करुणाकर अब तो, इनको शुभमति करो प्रदान ।
जनता के शुभचिन्तक सच्चे सेवक, हों यह वीर महान ॥

कहाँ गये ! दीनों के रक्षक, प्रिय प्रजा पालक महाराज ।
अमर नाम कर गये विश्व में, किया न कोई कभी अकाज ॥
रहे 'पुत्रवत' पालन करते, रखते थे सब का हित ध्यान ।
इसीलिये तो ! जन साधारण, करते थे सर्वस बलिदान ॥

किन्तु उन्हीं के 'वंशज' देखे, धर्म कर्म मट्टी में डाल।
खून चूसते हैं ! ग़रीब का, कहलाने वाले महिपाल ॥
जालिम ज़मीदार का देखा, निर्बल जन पर अत्याचार।
हाथ पैर को बांध लगाना, ऊपर से 'डंडों' की मार ॥

बोतल की कुल कुल ने कुल का, आज मिटाया नाम निशान।
कहां गये वह बर्छी-भाले, कहां गई वह तीर कमान ॥
समर भूमि में प्रतिद्वंदी, का शीश काट जो गये उछाल।
अब उनके सुत खेल रहे हैं, घर के आँगन में फुटबाल ॥

जिनके पुरखा एक बाँण से, देते थे 'मृगराज' पछार।
'खटमल' के काटे से मरते, आज उन्हीं के राजकुमार ॥
हाथ पैर अपने ही काटे, अगर उठा भी लें तलवार।
मूंठ सुनहरी उन्हें चाहिये, म्यान मखमली की दरकार ॥

कहाँ तुम्हारा ! गया हौंसला, कहाँ तुम्हारी ! गई उमंग।
मन पर मैल चढ़ा है जब से, तब से चढ़ा तेग पर जंग ॥
कहाँ गई वह तनी भृकुटियां, कहाँ गई वह रण ललकार।
तेरे घर में आज तड़फती है, कब की 'प्यासी' तलवार ॥

भूल गये सब राग रंग को, जब से मन हो गया मलीन।
नून चून सूखी लकड़ी, बस याद रहीं ! यह चीजें तीन ॥
मिली खाक में सब ठुकराई, गये 'रियासत' मद में चाट।
ठोकर खाते फिरैं ठाकुरा, ठाठ हुये सब बारह बाट ॥

स्वाभिमान पर पानी फेरा, 'किये' कहां कब अच्छे काम।
भोग विलासी होकर अपने, डुबो दिया पुरखों का नाम ॥
जो सिर मौर सदा रहती थी, आज झुकी क्यों तेरी पाग।
अरे बोल क्या ! नहीं धधकती, स्वाभिमान की उर में आग ॥

कहां गईं ! वह वीर नारियां, जिनके था उर में अभिमान ।
देश धर्म पर कर देती थीं, जो अपना सर्वस बलिदान ॥
तलवारों की धार आग की, लपटों से करतीं खिलवाड़ ।
उन्हीं 'वीर बालाओं' का यश, गाता है अब तक मेवाड़ ॥

'दवा' न पीछा कभी छोड़ती, कैसे इनके राजकुमार ।
सिंह प्रसूता रहीं कहाँ अब, जननी जनने लगी सियार ॥
भूल गईं निज कर्म-धर्म को, ऐसा कुछ होता आभास ।
यही देवियाँ क्या ? भारत में, 'हिन्दूकोड' करेंगी पास ॥

अंधे होकर विषय भोग में, डूब गये ! नर-नारी आज

❀ सुखद स्मृति ❀

—•—

'नारायण हरी' किसी ने द्वार पर आवाज़ लगाई, मैं स्नान करके धोती पहन रहा था। वहीं से बोल उठा 'आया महाराज' और एक रोटी पर थोड़ी सी दाल रखकर द्वार पर आ गया।

काली डाढ़ी, लम्बे केश, हृष्ट-पुष्ट, श्याम वर्ण, बड़े ही अच्छे लग रहे थे, गेरुआ वस्त्र पहिने! वह थे महात्मा! उनको रोटी देकर ज्योंही मैं लौटा वह बोल उठे 'क्या त्रिकलजी का यही घर है?' 'जी हाँ! सेवक भी यही है।'

'त्रिकलजी मैंने आपकी कविता की बड़ी प्रशंसा सुनी है। संध्या के समय 'गढ़ी के मन्दिर' में आइये मैं वहीं ठहरा हुआ हूँ।'

उन दिनों हमारे कस्बे में तलाशियाँ भी हो रही थीं और गिरफ्तारी भी। मैं महात्माजी के पास पहुँचा, वह लगे कविता सुनाने धारा प्रवाह सुनाते ही रहे, मैं दंग रह गया। फिर तो— नित्य ही उनकी कविता सुनता और वह सुना करते थे नित्य ही मुझसे 'वधशाला'। एक दिन वह मुझ से बोले—

'त्रिकलजी! अब मेरा तो सब कार्य समाप्त हो गया कल चला जाऊँगा मुझे तुम्हारी सहृदयता पर तरस आता है मैं सी० आई० डी० का इंस्पैक्टर हूँ। क्या 'बमपार्टी' से तुम्हारा भी सम्बन्ध है?

"महाराज मेरे पास तो 'वधशाला' है चाहे इसे बम समझो चाहे पिस्तोल!" कभी कभी याद आ जाते हैं आज भी! वह महात्मा, उनकी नेक सलाह और उनकी सुहृदयता। —त्रिकल

कहां गईं ! वह वीर नारियां, जिनके था उर में अभिमान ।
देश धर्म पर कर देती थीं, जो अपना सर्वस बलिदान ॥
तलवारों की धार आग की, लपटों से करतीं खिलवाड़ ।
उन्हीं 'वीर बालाओं' का यश, गाता है अब तक मेवाड़ ॥

'दवा' न पीछा कभी छोड़ती, कैसे इनके राजकुमार ।
सिंह प्रसूता रहीं कहाँ अब, जननी जनने लगी सियार ॥
भूल गई निज कर्म-धर्म को, ऐसा कुछ होता आभास ।
यही देवियाँ क्या ? भारत में, 'हिन्दूकोड' करेंगी पास ॥

अंधे होकर विषय भोग में, डूब गये ! नर-नारी आज ।
बुरी भावना बुरे आचरण, हा ! दूषित होगया समाज ॥
माता पिता ही रहे न अच्छे, तब हो अच्छी क्यों ? सन्तान ।
जैसे बोया 'बीज' लगेगा, वैसा ही ! फल उस पर आन ॥

द्रवित हृदय हो सका न जिसका, उसका दम्भ वृथा अभिमान ।
अरे ! बोल क्या और सुनेगा, मेरी 'करुण कथा' नादान ॥
यही देखकर नित जलता हूँ, आज होगया है यह हाल ।
मुझे 'काट कर' जन्म भूमि की, बलिवेदी पर देना डाल ॥

इसकी 'मिट्टी' ने पाला है, किया सदा इसका जल पान ।
जिया इसी के लिए करूंगा, इसके हित ही में बलिदान ॥
जैसे भी हो सके हमारी, जन्म–भूमि का हो उद्धार ।
महा ज्वाल में जल कर अपना, मैं सर्वस्व करूंगा छार ॥

बस अन्तिम अभिलाषा मेरी, यही एक अब है भगवान् ।
'राख' हमारी के हर कण से, गूंज उठे जय राजस्थान ॥
जिसे रमा कर 'विकल' प्रेम से, युवक गाँय आजादी गान ।
हंसते हंसते भारत माँ के, चरणों पर होवें बलिदान ॥

❀ सुखद स्मृति ❀

—o—

'नारायण हरी' किसी ने द्वार पर आवाज लगाई, मैं स्नान करके धोती पहन रहा था। वहीं से बोल उठा 'लाया महाराज' और एक रोटी पर थोड़ी सी दाल रखकर द्वार पर आ गया।

काली डाढ़ी, लम्बे केश, हट्टे-कट्टे, श्याम वर्ण, बड़े ही अच्छे लग रहे थे, गेरुआ वस्त्र पहिने! वह अधेड़ महात्मा। उनको रोटी देकर ज्योंही मैं लौटा वह बोल उठे 'क्या विकलजी का यही घर है।' 'जी हाँ! सेवक भी यही है।'

'विकलजी मैंने आपकी कविता की बड़ी प्रशंसा सुनी है! संध्या के समय 'गढ़ी के मन्दिर' में आइये मैं वहीं ठहरा हुआ हूँ।

उन दिनों हमारे कस्बे में तलाशियां भी हो रही थीं और गिरफ्तारी भी। मैं महात्माजी के पास पहुँचा, वह लगे कविता सुनाने धारा प्रवाह सुनाते ही रहे, मैं दंग रह गया। फिर तो— नित्य ही उनकी कविता सुनता और वह सुना करते थे नित्य ही मुझसे 'वधशाला'। एक दिन वह मुझ से बोले—

'विकलजी! अब मेरा तो सब कार्य समाप्त हो गया कल चला जाऊँगा मुझे तुम्हारी सुहृदयता पर तरस आता है मैं सी० आई० डी० का इंस्पैक्टर हूँ। क्या 'बमपार्टी' से तुम्हारा भी सम्बन्ध है?

"महाराज मेरे पास तो 'वधशाला' है चाहे इसे बम समझो चाहे पिस्तोल!" कभी कभी याद आ जाते हैं आज भी! वह महात्मा, उनकी नेक सलाह और उनकी सुहृदयता। —*विकल*